जब पपिहा बोलत निश आई तब कोउ ताहि सुनावैजी ॥ २ ॥
दोहा–विरह जरी हौंतो परी, तू कत आय जरात ॥
रेखग पापी मूढमति, अबलन काहि सतात ॥
चौ०–अबलन काहि सतात पीय पिय कहि अधरात सुनाईजी॥
तू नहिं सुखित दुखित विन नीरा जान न पीर पराईजी ॥
करत कहा इतनो कठिनाई हरि बिन बोलत आईजी ॥
काहे अगिलो जन्म विगारत आरत उर उपजाईजी ॥ १ ॥
हैं सारंग हम तेरी चेरी कहति एक तिन माईजी ॥
ऊंचे टेर सुनावहु जाई पौढे जहँ सुखदाईजी ॥
गइ ग्रीषम ऋतु पावस आई सब मन चाव बढ़ाईजी ॥
तुम बिन ब्रजतिय डोलत ऐसे नाव विना करियाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मानैंगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम ॥
लेहु सुयश चातक बड़ो, ले आवहु सुखधाम ॥
चौबोला–ले आवहु सुखधाम कोऊ सखी ऐसे वचन सुनावैजी ॥
यह विहंग सुख देन सखीरी मेरे मन अति भावैजी ॥
पियके विरह भयो जरकारो निशि दिन पीरट लावैजी ॥
तज्यो सिंधुको जल कर खारो स्वाति बूंद मन चावेजी ॥ १ ॥
आप पीर पर परिहि पावे पियको नामं सुनाईजी ॥
प्रेम बाण लाग्यो जिहिं होई व्यथा प्रेमकी पाईजी ॥
कोउ कहत कोकिलही टेरी ऐसे ताहि सिखाईजी ॥
फिर आवहि बारिक तहाँ जाई वसंत जहाँ सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तू कुलीनरी कोकिला, मधुरे वचन सुनात ॥
तो सम उपकारी नहीं, जानत हम दुख पात ॥
चौ०-जानत हम दुखपात उपननः बैठि श्यामको टेरीजी ॥
कहियो अवलन मन्मथ घेरी ल्याहु श्यामको फेरीजी ॥

प्राण पलट जिमि मिलत नयेरी लेहु सुयशकी ढेरीजी ॥
है हैं विन मोलन हम चेरी गावहिं कीरति तेरीजी ॥ १ ॥
कोऊ ऐसे कहि उठत अब बरजहु बोलत मोरेजी ॥
रह्यो परत नाहिं सुनि सुनि टेरी विन श्रीनन्द किशोरेजी ॥
मोरहु सखि बैरी भये मारत वचनन करि शर जोरेजी ॥
ये बनते नटरैं न मरैंरी हरि विन लगत कठोरेजी ॥ २ ॥

दोहा—मगन भई ब्रजनारि सब, भरी विरहरस माहिं ॥
निशि वासर हरिको रटत, इकक्षण न्यारी नाहिं ॥

चौबोला—इकक्षणन्यारी नाहिं दृगनबिच हरिछबि रहीसमाईजी॥
रसना कृष्ण नाम रट लाई और कछू न सुहाईजी ॥
श्रवण रहे हरिको यश भरके मन हरिके गुण गाईजी ॥
बसी श्याम मूरति उरमाई विसरत इक पलनाईजी ॥ १ ॥
बैठत उठत चलत घर बाहर हरि स्नेह अनुरागीजी ॥
सोवत जागत दिन अरु राती प्रीति कृष्ण सों लागीजी ॥
सकल अंग हरिके रस पागी हरि मय भई सभागीजी ॥
धनि सो प्रीति कृष्णसों लागी धन्य सुरति रसपागीजी ॥ २ ॥

दोहा—धन्य जोई सुख जानिये, प्रभुके संग विहारि ॥
धनिधनि सो दुखमानिये,हरिके विरहदुखारि ॥

चौबोला—हरिके विरह दुखारि परेखो धनिसो हरिको जोईजी ॥
धन्यसरेखो हरिको होई याते धन्य न कोईजी ॥
जप तप धन्य जो हरि हित जोई ज्ञान ध्यान धनि सोईजी ॥
सब विधि धन्य जिने हरि आशा धनिसो हरिजन होईजी ॥१॥
नन्द यशोमति गोपी जन सब निशि बासर हरि ध्यावैजी ॥
विहारन प्रभु मिलनेकी आशा क्षण क्षण सब मन चावैजी ॥
विसरे सब व्यवहार और मन दूजो कछु न सुहावैजी ॥

अंध लकुटिया धारि एक सब हरि मूरति चितलावैजी ॥ २ ॥

अथ श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीतलीला।

दोहा–जबते हरि मथुरा बसे, रहत सकल सुख पाय ॥
निरखि निरखि दोऊ सुतन, मगन देवकी माय ॥
चौबोला–मगन देवकी माय परमानंद मुदित दोउ भाईजी ॥
सुखी सकल यादव गण जेते अरु सब लोग लुगाईजी ॥
देत सबन सुख हरि सुखदाई वसुदेव मन यह आईजी ॥
बोले जे कुल मध्य प्रधाना करि आदर बैठाईजी ॥ १ ॥
तिनसों कहि यह बात सुनाई राम कृष्ण दोउ भाईजी ॥
ग्वालन मध्य रहे ब्रजजाई यदुकुल रीत न पाईजी ॥
हैं अबहीं कुल धर्म अयाने ताते मोमन आईजी ॥
यज्ञोपवीत दुहुँनको दीजै यह विचार मन माईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनत वचन हरषे सकल, बात सबन मनभाइ ॥
गर्ग आदि सब विप्रवर, लीने तुरत बुलाइ ॥
चौबोला–लीने तुरत बुलाइ ऋषी शुभ आसनपर बैठायेजी ॥
पूछि सुदिन शुभ लगन धराई सामा सकल सजायेजी ॥
सकल तीरथन सों जल आये . तब दोउ भ्रात न्हवायेजी ॥
सकल वेद विधि मंत्र पढे अरु कर अभिषेक सुहायेजी ॥ १ ॥
दियो यज्ञ उपवीत दुहुँनको गर्ग मुनी हरषायोजी ॥
वेद श्वास जाको सब गावैं शेष पार नहिं पायोजी ॥
ताहि दियो उपदेश गायत्री मंत्रहि गर्ग सुनायोजी ॥
पूजे द्विज सब सहित विवेका दियो दान मन भायोजी ॥ २ ॥
दोहा–नर नारी आनँद भरे, गावत मंगलचार ॥
लखि कौतुक सुरगण सुखी, वरपत सुमनअपार ॥

चौबोला-वरषत सुमन अपार मगन मन दुंदुभि गगन बजावैजी॥
अति आनंद भयो सब काहू तात मात सुख पावैजी॥
पुनि इकदिन वसुदेव सुज्ञानी यह विचार ठहरावैजी॥
पंडित भलो कहूं जो पावें विद्या सुतन पढावेजी॥ १॥
संदीपन पंडित बड़ ज्ञानी यह कोउ बात चलाईजी॥
रहैं अवंतीपुरके माईं तासम अरु कोउ नाईंजी॥
यह सुनि कृष्णा सकल गुणखानी पितुके मनकी पाईजी॥
ह्वैके नेम सहित दोउ भाई पढन चले यदुराईजी॥ २॥

दोहा-कर प्रणाम गुरुसों हरी, रहे कछुक दिन जाइ॥
वेद विहित सेवा करे, पढन लगे दोउ भाइ॥

चौ०-पढन लगे दोउ भाइ विद्या सब अल्प कालमें पाईजी॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो आनँद उर न समाईजी॥
जानि जगतपति कहत मनहिं मन ये त्रिभुवनके राईजी॥
तब हरि गुरुसों सहित सनेहा ऐसे विनय सुनाईजी॥ १॥
गुरू दक्षिणा जो कछु चैये सो आयसु अब कीजेजी॥
तब गुरु कह्यो विचार मनहिं मन कहा मांगो सो चीजेजी॥
तुम प्रभु करता हो जगहीके कहा तुम सों हरि लीजेजी॥
बूझि लेहुँ निज नारि प्रभू अब जो वह कह सो दीजेजी॥ २॥

दोहा-तब संदीपन तीय पै, आये अति सुखपाय॥
वचन कृष्ण मुखते कहे, सो सब दिये सुनाय॥

चौबोला-सो सब दिये सुनाय दक्षिणा देन कहत यदुराईजी॥
मांगें कहा वेहैं जगकरता सो बूझत तुम पाईजी॥
मरे हुते ताके सुत दोई सो मांगे उन आईजी॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी जल थल हारि सब ठाईंजी॥ १॥
गये बहुरि जनके सुखदाई उत्पति पालन कारीजी॥

आनंदिये गुरुके सुत सोई भक्तनकें दुखहारीजी ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विज नारी मिट्यो सोकसुत भारीजी ॥
ह्वै प्रसन्न गुरुदई अशीशें करि प्रणाम बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–गुरु आयसुले तब पुनी, अति हरषित दोउ भ्रात ॥
आये मधुपुर जन सुखद, तात मात बलिजात ॥
चौबोला–तात मात बलिजात देखि मुख दंपति भये सुखारीजी
भयो मनोरथ सब मन भायो उर आनँद अति भारीजी ॥
उग्रसेन आयसु हरि करहीं राजकाज अधिकारीजी ॥
सुखी सकल हरि वदन निहारी पुरजन नर अरु नारीजी॥ १ ॥
ऊधो अरु अक्रूर सखा ये हरिके संग सुहाईजी ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत हरि इनके सँग यदुराईजी ॥
ब्रजवासिनको ध्यान सदाई विहारन प्रभु मनमाईजी ॥
यदपि ब्रह्म सुखखान तदपि हरि भक्तवश्य सुखदाईजी ॥ २ ॥

अथ उद्धवजीकी विदालीला।

दोहा–श्री कृष्ण यदुनाथ के, ऊधो सखासज्ञानि ॥
प्रेम कथा जानत नहीं, एक ब्रह्मसुख मानि ॥
चौबोला–एक ब्रह्मसुख मानि हरीको त्रिगुण स्वरूप लखावैजी ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावैं तब ऊधो उचटावैजी ॥
भली वान याकी यह नाईं लखि हरिमन पछितावैजी ॥
रूप रेख जाके नहिं कोई सो स्वरूप यह ध्यावैजी ॥ १ ॥
निर्गुण कथा योगकी गावै तामें स्वाद न पावैजी ॥
ज्ञानगर्व में रहत उदासी एक ब्रह्ममन लावैजी ॥
बिछुर मिलन दुख सुख जे नाईं नहीं प्रेमतन आवैजी ॥
कनक कलश पानी बिन जैसे याको रूप सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो कछु मानत नहीं, कहूं प्रेमकी गाथ॥
हंस और बायस मनो, मिल्यो दुहुनको साथ॥
चौ०–मिल्यो दुहुँनको साथ ऐसे हरि कहत मनहिं सुखदाईजी
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे प्रेम न याहि सुहाईजी॥
कहां यशोमति महर नंदसे सुखदतात अरु माईजी॥
कहां वह सुख ब्रज धाम कुंजको निशदिन विसरत नाईजी॥१॥
कहां सखनको संग कहां वह वृंदावन सुखकारीजी॥
कहां वह प्रेम तरंग यमुन तट बंसीवट छबि भारीजी॥
कहां नवैल ब्रज गोप कुमारी कहां वृषभानु दुलारीजी॥
कहां वह प्रीति रीति सुख संगा कहां वह रास विहारीजी॥२॥
दोहा–कहां कुंज वनकेलि सुख, कहां मान सुखदाइ॥
कहां लगि ब्रजके सुख कहों, लखि वैकुंठ भुलाइ॥
चौ०–लखि वैकुंठ भुलावे यह रस काहि ये कासों जाईजी॥
ऊधो सुनत प्रेमको भागे याको नाहिं सुहाईजी॥
कैसे प्रेम होय यामाई कहे मानि है नाईजी॥
याको ब्रज अब देहुँ पठाई तहाँ प्रेम यह पाईजी॥१॥
यहै बात यदुपति उर आनी यह कहि याहि पठाईजी॥
कहो जाय तिन ज्ञान दृढावो दीजे प्रेम मिटाईजी॥
कहि हैं हरि जानत मुहिं ज्ञाता सुनत तुरत यह जाईजी॥
करि अभिमान तुरत ब्रज जैहै वहां साध ह्वै आईजी॥२॥
दोहा–ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान॥
ऊधोके उरते करों, दूर ज्ञान अभिमान॥
चौबोला-दूर ज्ञान अभिमान करों मन ऐसे कहत गुपालेजी॥
ऊधोजी हरिके निकटही आय गये तिहिं कालेजी॥

१ काग। २ लहर। ३ तरुणावस्था। ४ पास।

सखा सखा कहि अंकम भरिकै विहँसि मिले नँदलालेजी ॥
ऊधो सों ब्रज बात चलाई भुजगहि दीनदयालेजी ॥ १ ॥
ऊधो सुनो कहों तुम पाई ब्रज सुख विसरत नाईजी ॥
नेकहु नहीं यहां मन लागत उतहीको मन जाईजी ॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये ग्वालनमें सुख पाईजी ॥
कहां वह यशुमति दै दै माखन अति हित लेत बलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—वह राधाकी प्रीति अति, नेक न विसरी जाय ॥
गोप सखा वृंदा विपिन, बंसीबटकी छांय ॥
चौबोला—बंसीबटकी छांय तजी मुहि तबते कछु न सुहाईजी ॥
कहा कहौं हरि यों अकुलाई कहि ऊधो मुसकाईजी ॥
जग व्यवहार सकल मिथ्याई सदा हेत थिर नाईजी ॥
मोसों सुनो बात यदुराई एक ब्रह्म सुखदाईजी ॥ १ ॥
विहँसि ज्ञानकी बातहि ऊधो जब ऐसे समुझाईजी ॥
तब यदुपति सुख पाय मनहिं मन पुनि बोले हरषाईजी ॥
उद्धव कहि जो बात तुमहिं यह सो मेरे मन भाईजी ॥
सखा और मेरो हितकारी तुम समान कोउ नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—करि आवहु यह काज मम, ऊधो तुम ब्रज जाय ॥
पूरण ब्रह्म अलख अज, पिता न जाके माय ॥
चौ०-पिता न जाके माय रूप अरु रेख जाति कुल नाईजी ॥
व्याप रह्यो सब घट घट माईं जल थल अरु सब ठाईजी ॥
हो ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी गोपिन प्रीति सुहाईजी ॥
यह मति तिन्हें बोध करि आवो दीजे प्रेम मिटाईजी ॥
मेरे प्रेम विवश वे बाला सहत विरह दुखभारीजी ॥
सोच श्वास मारुत बलवाना काम अग्नितनु जारीजी ॥
भस्महोन पावत सो नाईं भीजत दृगजल धारीजी ॥

विरह व्यथा व्याकुल दिन राती ऐसे सब ब्रजनारीजी ॥ २ ॥
दोहा–मेटहु तिनको दाहु यह, सखा वेग तुमजाय ॥
पठऊं नारिनके निकट, आवहु ज्ञान दृढाय ॥
चौबोला–आवहु ज्ञान दृढाय सखा मम तुमज्ञाता अतिभारीजी
देहु ज्ञान तुम जाय तियनको साधनसीखें सारीजी ॥
ज्ञान योग उपदेश कियेते सुखपावें वे नारीजी ॥
ब्रह्म अलख परचहिं वे सब अब डारहिं मोहिं विसारीजी ॥ १ ॥
ऊधो तुम सम हितू नकोई कहत तोहिं समुझाईजी ॥
कैसे हूँ मुहिं उन गोपिनसों ऊऋण कीजे जाईजी ॥
निशिदिन भक्ति करें वे मेरी और न कछू सुहाईजी ॥
तन मन प्राण समर्पण कीने विरह विकल अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मुक्ति तीन तिनको दई, एकहु लइ उन नाइ ॥
रही एक सायोजसो, ज्ञान विना नहिं पाइ ॥
चौबोला–ज्ञान विना नहिं पाइ सखा अब देवहु ज्ञान दृढ़ाईजी
जिहिं पावें वे पद निरवाने गोपीजन समुदाईजी ॥
जो न करें अंगीकृत तो मैं हों उनको ऋणयाईजी ॥
गाय चरावत उनकी रहिहों ब्रज तजि अंत न जाईजी ॥ १ ॥
यहै बात मोमन में आवै रहिहौं ब्रजके माईजी ॥
और नकछु मोपै बनिआवै यह मेरे मन भाईजी ॥
ऊधो जाउ वेगि उनको अब मोविन पलन सुहाईजी ॥
समाधान तिनको करि आवो करियो विलम नह्वांईजी ॥ २ ॥
दोहा–बिलम नरहियो वहां तुम, ऊधो ब्रजमें जाय ॥
तुम बिन हम अकुलाय हैं, करत श्याम चतुराय ॥
चौबोला–करत श्याम चतुराय तुम्हें कहा बारहि बार सिखाईजी
जैसे जल विन मीन जानियो तुम विन हम अकुलाईजी ॥

कही श्याम ऐसे जब वाणी तब ऊधो मन आईजी ॥
यदुपति योग सांच अब जान्यो रहे ज्ञान गरबाईजी ॥ १ ॥
बोल्यो अति अभिमान बढाई तुम आयसु यदुराईजी ॥
तुम पठवत गोपिनके पाई मैं क्यों करिहों नाईजी ॥
तुम्हरे कहे ब्रजहि मैं जैहों देहों ज्ञान सुनाईजी ॥
जो मानहीं ब्रह्म उपदेशे तो कहिहों समुझाईजी ॥ २ ॥

दोहा–दिन द्वै रहिहों जाय ब्रज, ब्रजवासिनके माँह ॥
सुख पैहों तिनको निरखि, पुनि गैहों पद आइ ॥

चौ०–पुनि गैहों पद आइ सुनतही विहँसि कह्यो सुखदाईजी ॥
जाहु उपंगसुत ब्रजको अबहीं देवहु ज्ञान दृढाईजी ॥
एक पंथ द्वै कारजकीजे दीजे खबरहु जाईजी ॥
जबते इत आये हम तबते ब्रज पठयो कोउ नाईजी ॥ १ ॥
नन्द यशोदहि खबर जनावो पुनि परतोपहु ग्वारीजी ॥
कहियो ज्ञान योग विस्तारी जिन सकुचौ लखि नारीजी ॥
वचन सुनत समुझहिं सुकुमारी हैं प्रवीन वे भारीजी ॥
ज्यों जल पाये मीन विरहते ह्वैहैं शीतल सारीजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो को इहि काज हरि, पठवत थापि महंत ॥
ब्रज बनितनके दरशते, ह्वै आवेंगे संत ॥

चौबोला–ह्वै आवेंगे संत जानि मन पठवत कुँवर कन्हाईजी ॥
अपनोहीं रथ लियो मँगाई दियो तुरत पलनाईजी ॥
अपने भूषण बसन मँगाये दीने निज पहराईजी ॥
अपनो मुकुट आपनी माला उर विसाल छबि छाईजी ॥ १ ॥
ऊधो तब हरि रूप सुहाये भृगुपद चिह्न सो नाईजी ॥
लिख्यो पत्र तब श्री यदुराई नंदहि विनय बड़ाईजी ॥
पालागन दोऊ कर जोरी यशुमति चरणन माईजी ॥

बालक ग्वाल सखा समुदाई लिख्यो मिलन उरलाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रीति सहित हरि सब लिखे, ब्रजके नर अरु नारि ॥
योग सकल गोपीन को, लिख पठयो बनवारि ॥
चौबोला–लिख पठयो बनवारि भाव यह काऊजान नपाईजी ॥
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला यह हरिके मन आईजी ॥
लखि पाती ऊधो कर[1] दीनी मुखते और सुनाईजी ॥
नीके रहियो यशुमति मैया अब ऐहैं दोउभाईजी ॥ १ ॥
कहा कहों जादिनते मैया बिछुरयो तोते आईजी ॥
तादिनते अब यहां न कोई कहत न मोहिं कन्हाईजी ॥
अति दुख पायो मात तुमहिं अब कह्यो संदेश न जाईजी ॥
अबमोको निज तात कहत यहां वसुदेव देवकि माईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहियो बाबा नंदसों, कहा मन लियो निठुराय ॥
दियो इतै पहुँचाय पुनि, लियो शोध नहिं आय ॥
चौबोला–लियो शोध नहिं आय बाबा सों यों कहियो समुझाईजी
पुनि जैयो बरषाने तहँ सब दीजै खबर जनाईजी ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे रहत विरह दुख माईजी ॥
तिन्हें जाय मम दिशते भेटो मेटो सब दुख जाईजी ॥ १ ॥
ब्रजवासी जेते नर नारी खग मृग सब बनचारी[2]जी ॥
अरस परस कहियो कुशलाती जो जैसो हितकारीजी ॥
मित्र एक मम दरशन सों तुम लखि सुख पैहो भारीजी ॥
वृन्दावनमें रहत निरंतर[3] होंत न उर[4]ते न्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सघन कुंज अरु लता तिन, मिलियो शीशनवाइ ॥
इहि विधि ऊधो सों हरिः, मनकी बात सुनाइ ॥
चौ०–मनकी बात सुनाइ ऊधो सों दियो प्रेम दरशाईजी ॥

१ हाथ । २ वनके जीव । ३ सदासर्वदा । ४ हृदय ।

ज्ञान गर्व दीनो उपजाई ऊधोके मन माईजी ॥
ब्रजकी प्रीति प्रगट यों हरिने ऊधोको समुझाईजी ॥
चले करन विपरीत ऊधो तिन ज्ञान सिखावन जाईजी ॥ ॥१॥
ऊधोको लखि जात ब्रजहि तब हलधर लियो बुलाईजी ॥
समुझत ब्रजकी बात मनहिंमन भरचो नैन जल आईजी ॥
कहा कहौं ऊधो मैं तुमसों यशुमति हेतु जनाईजी ॥
एक दिवस खेलत मम साथा झगरे श्रीयदुराईजी ॥ २ ॥

दोहा—तबहीं यशुमति दौरि मुहिं, लीनों गोद उठाय ॥
करसों ठेल्यो श्यामको, दीनो दूर हटाय ॥

चौबोला—दीनों दूर हटाय बनहिंते आये तब नँदराईजी ॥
इन्हें गोदले मोहिं खिजायो ऐसे वचन सुनाईजी ॥
तोको छोह लगत नहिं राई यह नहनो तेरो भाईजी ॥
वह हित नाहिं विसरत है हमको कह्यो सँदेश नजाईजी ॥ १ ॥
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई दोउ भैयन कुशलाईजी ॥
कहियो हम हैं तनय तुम्हारे मात पिता अरु नाईजी ॥
कारज कछुक और है हमको मिलिहैं तुमसों आईजी ॥
नाहिं विसरत क्षण गोकुल तुम तजि हमें न सुखकोउ ठाईजी॥२॥

दोहा—तब देवकि वसुदेवने, सुन पाईं यह बात ॥
ऊधो रथहि सजायके, ब्रजहि पठायो जात ॥

चौ०—ब्रजहि पठायो जात समुझिहित वसुदेव निज मन आईजी
लिख्यो सुपत्र नन्द यशुमतिको अतिहित विनय बड़ाईजी ॥
पालदिये तुम सुवन हमारे ऊऋण तुमते नाईजी ॥
राम कृष्ण तुमरे सुत जानो जिन सकुचो जियमाईजी ॥ १ ॥
बालपने में तुम प्रतिपारे कहँ लगि करौं बड़ाईजी ॥
हम तो पाये वैस कुमारा कृपा तुम्हारी पाईजी ॥

हरिसों मिल किन जात इहांई मति कल्पो मन माईजी ॥
श्याम राम तुमरो यशगावै निशिदिन विसरत नाईजी ॥ २ ॥
दोहा-लिखि पाती वसुदेव तब, दइ ऊधो करमाइ ॥
तुरत अंक भरि श्याम तब, दियो रथहि बैठाइ ॥
चौबोला-दियो रथहि बैठाइ जाहु कहि कीनो विदा मुरारीजी ॥
चल्यो उपँगसुत ब्रज पथ लीनो हरि आयसु शिरधारीजी ॥
ऊधो चले गर्व मन भारी कहा समुझेगी ग्वारीजी ॥
देखों धो ब्रज लोगन जाई हित मानत बनवारीजी ॥ १ ॥
चले उपँगसुत ब्रजको जावें मनहीं मन सुख पावेजी ॥
होत शकुन उत अति शुभकारी गोपिनके मन भावेजी ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लग आई कछु दुख कछु हरषावेजी ॥
समुझि सो शकुन दरश अनुरागीं जहँ तहँ काग उड़ावेजी ॥ २ ॥

लावनी ।

कह वायस सों गोपी सब मन हरषाई ॥
तो उड़रे काग जो आवें कुँवर कन्हाई ॥
टेक-अंचरकी देहों पाग यों वचन सुनावे ॥
सुनि बायस तिनके वैन तुरत उड़जावे ॥
सो देख सखी सब आपुसमें बतरावे ॥
सखि आवे गोकुल श्याम कि कोउ पठावे ॥
फरकत हैंरी मम नैन और भुज बाई ॥
तो उडरे काग जो आवें कुँवर कन्हाई ॥ १ ॥
टूटत हैं कंचुकि बंद उमँग मन आवे ॥
अब विन बयारही अंबरहू फहरावे ॥
उठ उठ बैठत है काग कहे उड़जावे ॥

लगि लगिके श्रवणन जात भ्रमर मडरावे॥
यह होत शकुन शुभ आवत हरि सुखदाई॥
तो उडरेकाग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ २॥
फेरी विधिं भाग्यदशा अब शुभ धरि आई॥
हम सम बड़ भागिन और जो मिलै कन्हाई॥
अतिही बड़भागी नन्द यशोमति माई॥
दीजै अब सब दुखटारि रहो सुखपाई॥
अब मिलैं श्याम तो राखैं हृदय बसाई॥
तो उडरे काग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ ३॥
घर घर में शकुन मनात सकल ब्रजनारी॥
विहारन प्रभु दरशन आश सबन मन धारी॥
मथुरा तन इकटक लायहि रहत निहारी॥
सब यहै करत अभिलाष मिलहिं गिरिधारी॥
कब आवहिं सुन्दर श्याम कहति समुदाई॥
तो उडरे काग जो आवैं कुँवर कन्हाई॥ ४॥

अथ उद्धवजीकी ब्रज गमन लीला।

दोहा—मथुरा तजि उद्धवचले, गोकुलके समुहाइ॥
बैठे रथ शोभित जनुः, दूजे कुँवर कन्हाइ॥
चौबोला—दूजे कुँवर कन्हाइ मुकुट पीतांबर शुभग सुहाईजी॥
श्याम रूप शोभित अँग आछे शोभा कहत न आईजी॥
दूरहिते रथकी उजियारी लखि ब्रजतिय हरषाईजी॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई जहँ तहँ ते उठधाईजी॥ १॥
कहत परस्पर देखहु आली मधुबनते हरि आवैजी॥
एक कहति चल देख सखीरी तैसोइ रथ दरशावैजी॥

तैसोइ मुकुट मनोहर राजै शोभापरम सुहावैजी ॥
रथतन सब देखत अनुरागीं पीतांबर फहरावैजी ॥ २ ॥
दोहा–ज्यों ज्यों रथ आवत निकट, त्यों त्यों सब हरषाइ ॥
सुख व्याकुलता सब भरीं, आनँद उर न समाइ ॥
चौ०-आनँद उर न समाय जबहिं लगि रथ आवत नियराईजी॥
तब लगि मानहु कल्प विहाई धीर धरत मन नाईंजी ॥
आवत हैं नँदलाल कहत यह सब ब्रज घर घर माईंजी ॥
तरुण वृद्ध अरु बाल चले सब देखनको हर्षाईजी ॥ १ ॥
चले लेन आगे अति हर्षित नंद यशोदा माईजी ॥
भये परम आनंद तिहीं क्षण ब्रजजन लोग लुगाईजी ॥
जब कछु रथ आगे नियरायो तब सबके मन आईंजी ॥
श्याम अकेले रथके माईं हलधर दीसत नाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–जो हलधर तिन सँग नहीं, तो नहिं कुँवर कन्हाइ ॥
इतनी कहत समीपही[2], पहुँच्यो रथ तहाँ आइ ॥
चौबोला-पहुँच्यो रथ तहाँ आइ ऊधोको निरखि नैन भरि आईजी
रहीं ठगीसी सब ब्रजनारी[1] नूतन[3] विरह सताईजी ॥
मनहुँ गई निधि केहूं पाई ले कर माहिं गवाईजी ॥
ह्वैगइ सपनेकी रजधानी जागत तहँ कछु नाईंजी ॥ १ ॥
जबहीं कह्यो श्याम तो नाईं सुनि यशुमति अकुलाईजी ॥
परी धरणि मुरछित दुख पाई तनुकी सुधि कछुनाईंजी ॥
विकल परी यशुमति तिहिं ठाईं ब्रजतिय तहां चलि आईजी ॥
श्याम विना रथ लखि अकुलाईं जहँ तहँ सब मुरझाईजी ॥२ ॥
दोहा–रुदन करत व्याकुल परी, लीनी सबन उठाइ ॥
यशुदहि बोध करत यह, पठयो कुँवर कन्हाइ ॥

१ स्त्री। २ निकट। ३ नवीन।

चौबोला—पठयो कुँवर कन्हाइ भली भई सखा पठायो श्यामाजी
उठहु बूझिये हरि कुशलाई कहति महर सों बामाजी ॥
कुशल घरी यह आज मानिये कुशल श्याम बलरामाजी ॥
इनके कर है है लिख्यो हरि आवनको ब्रजधामाजी ॥ १ ॥
यह सुनि उठी कछुक सुख पाई ऊधो निकट लखायोजी ॥
हरिके रूप निरखि सुख पायो श्याम सखा सब गायोजी ॥
ऊधो निरखि कहत ब्रजनारी सुन्दर शील सुहायोजी ॥
ताहीते हरि याहि पठायो हरि सँदेशले आयोजी ॥ २ ॥

दोहा—नीके कहि हैं वचन यह, हम सुनिहैं सुखपाय ॥
ऐहैं अब हरि वेगही, कहिहैं यहै सुनाय ॥

चौबोला—कहिहैं यहै सुनाय चहूं दिश घेर लियो रथ जाईजी ॥
नंद गोप ब्रज लोग लुगाई चले घरहि लीवाईजी ॥
ऊधो रथते हरषि उतारे नंद द्वारपर आईजी ॥
धनि धनि तिन कहि आदरकीनो लीने घरके माईजी ॥ १ ॥
चरण धोय आसन बैठाये ऊधोको नँदराईजी ॥
बहु प्रकार भोजन करवाये व्यंजन विविध बनाईजी ॥
विविध भांति करके पहुनाई तब नंद बात चलाईजी ॥
ऊधो कहो कुशल दोउ भाई वसुदेव देवकि माईजी ॥ २ ॥

दोहा—करत हमारी सुध कंबहुँ, कहु ऊधो बलवीर ॥
पुलकि गात गदगद वचन, पूछत नंदअहीर ॥

चौबोला—पूछत नंद अहीर कहा कहूं चूकपरी अनजानाजी ॥
जाने करि अहीर हमतिनको घर आये भगवानाजी ॥
प्रथम गर्ग मुनि कह्यो वखानी माया विवस भुलानाजी ॥
अब ऊधोबिछुरे गिरिधारी मरिहैं विन लखि कान्हाजी ॥ १ ॥
ऊधो हम ऐसी नाहिं जानी कहति यशोमति रानीजी ॥

हरि हैं वासुदेव प्रगटाने मैं तिनको सुतमानीजी ॥
जासु विरंचि शिवध्यान लगावैं शेष न महिमा जानीजी ॥
सो बालक कर अतिहि अयानी बांधे ऊखल आनीजी ॥ २ ॥
दोहा-फाटत नाहिं भइ बज्रसम, छाती अतिहि कठोर ॥
समुझि हृदय पछितात अब, विन श्री नंदकिशोर ॥
चौबोला-बिन श्रीनंद किशोर ऊधो अब कैसे मनसमुझाऊंजी॥
वैसे भाग कबहुँ अब पैहों पुनि हरि गोद खिलाऊंजी ॥
जबते हरि मधुपुरी सिधारे तबते मैं पछिताऊंजी ॥
तलफत मीन नीर बिन जैसे कैसे दरशन पाऊँजी ॥ १ ॥
देखत दुहत औरके लरिका प्रात खिरकके माईंजी ॥
उठत शूल ऊधो मन क्योंहूं प्राणहुँ निकसत नाईंजी ॥
ग्वाल सखा सँग जोरि चरावन को गैयन लैजाईजी ॥
को आवै संध्या समय अब वनते गाय चराईजी ॥ २ ॥
दोहा-आंचरसों रज झारकै, काहि लेहुँ उरलाय ॥
खूब मनोहर कमल मुख, काकी लेहुँ बलाय ॥
चौबोला-काकी लेहुँ बलाय सांच अब कहिये ऊधो राईंजी ॥
कैसे रहत श्याम ह्वां सूधे मोहिं कहो समुझाईंजी ॥
खात कौनके धाम कन्हाई दही मही नित जाईंजी ॥
भोजन करत कहां ब्रजनाथा कौन बालकन माईंजी ॥ १ ॥
खेलत हँसत कौनसों बोलैं कौन सखा सँग जावैजी ॥
काके माखन चोरैं जाई कौन उरहनो ल्यावैजी ॥
वनमें यमुना तीर कौन अब गोपिन रोक रखावैजी ॥
किनको दूध दही ढरकावै किनसों दान चुकावैजी ॥
दोहा-यशुमति इतनी बूझि मन, सुमिरत कुँवर कन्हाइ ॥
बिलखि कह्यो तब नंदयों, कहु ऊधो समुझाइ ॥

चौबोला—कहु ऊधो समुझाइ बहुरि कब ऐहैं ब्रज बनवारीजी॥
ब्रजवासिनकी ताप नशैहैं दरश दिखा शुभकारीजी॥
मोहिं तात यशुमति सों माता कहत रहे गिरिधारीजी॥
कहि गये चलती बार मुरारी मिलि हों पुनि इक बारीजी॥१॥
करि हैं सो अपनो वचन हरि प्राति पालन जगताताजी॥
ऊधो कहौ कछू अब तुमसों कह्यो हरी सुखदाताजी॥
श्याम विरह ब्रजके नर नारी भये सकल कृष गाताजी॥
ऊधो हमको बिन मन मोहन युग सम दिवस बिहाताजी॥२॥
दोहा—लखि ऊधो ब्रज रीत सब, रहे कछुक सकुचाय॥
नंद यशोमति वचन सुन, बोले मन हरषाय॥
चौबोला—बोले मन हरषाय कही दोउ भाइनकी कुशलाईजी॥
दई श्याम दीनी सो पाती नंद महर कर माईजी॥
हरिको कह्यो संदेश सुनायो और कह्यो बल भाईजी॥
पाती बाँच नंद उरलाई मिले मनु कुँवर कन्हाईजी॥१॥
लिखी श्यामके करकी पाती ले यशुमति उरलावैजी॥
दुसह विरहकी ताप नशावै सुनि संदेश सुख पावैजी॥
पुनि वसुदेव लिखी सो पाती ले नँद बाँच सुनावैजी॥
कहत श्याम अब भये पराये नैन नीर भर आवैजी॥२॥
दोहा—सुनी बात वसुदेवकी, लिखी सो यशुमति माय॥
· यद्यपि हरि वसुदेव सुत, भये मधुपुरी जाय॥
चौबोला—भये मधुपुरी जाय उदर हरि देवकीके अवतारीजी॥
तद्यपि मोहिं धायके नाते मिल जाते इक बारीजी॥
ऊधो हम मन बहु समुझावें ब्रजके सब नरनारीजी॥
माखन हरि सुख योग देखि तब उठत शूल उर भारीजी॥१॥
तिन्हें बानि जाने बिन हरिको को वहां प्रात जगावैजी॥

रोटी अरु माखन बिन माँगे को करि प्रीति जिमावैजी ॥
है वसुदेव सदन सब योगा नवनिधि जो मन चावैजी ॥
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजबासी दही मही धन भावैजी ॥
दोहा–राजसुखन हरि कोटि करि, मेरे यह जिय सोच ॥
माखन सचुनहिं पावहीं, ह्वै हैं करत संकोच ॥
चौबोला-ह्वै हैं करत संकोच बारइक आवहिं ब्रजहि कन्हाईजी॥
मन करि माखन भोग लगावैं ब्रजके घर घर माईजी ॥
सपत रहै गोकुलमें नाईं उलटि मधुपुरी जाईजी ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई ऊधो पद शिरनाईजी ॥ १ ॥
तब ऊधो बोले धनि यशुमति धन्य महर नँदराईजी ॥
धन्य धन्य हैं भाग्य तुम्हारे जिनको प्रीय कन्हाईजी ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखराशी व्यापक घट घट माईंजी ॥
जैसे अग्नि काठके माईं पूररह्यो सब ठाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–मति जानों सुत करि तिन्हें, वे सबके करतार ॥
तात मात तिन्हके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥
चौबोला–भक्तन हित अवतार जाने नहिं हम हैं सब अज्ञानीजी
जन्म कर्म करिकै रहित हरि वे प्रभु पुरुष पुरानीजी ॥
हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने नर समान हरि मानाजी ॥
ज्योंशिशु आप चक्र सम फिरही ताहि फिरत सब जानाजी ॥
रटहु जान प्रभु हरिको जाते मुक्त पदारथ पाईजी ॥
ऊधो जो तुम हमहिं सिखावत हम मन बहु समुझाईजी ॥
देखे बिना रह्यो नहिं जाई वह मृदुरूप कन्हाईजी ॥
ऊधो कैसे जात बिसारे ब्रज जीवन सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जादिन नहिं जाते हरिः, बनको कुँवर कन्हाइ ॥
तादिन बनके जीव जे, खग मृग सब अकुलाइ ॥

चौबोला–खग मृग सब अकुलाइ निहारे विन नाहिं नेक सुहाईजी
रूपनिधान साँवरी मूरति सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
सो मृग तृण भरि उदर न खावै भये कृष श्याम विनाईजी ॥
जो मुरली ध्वनि सुनि खग मोहे सो मुख फल नहिं खाईजी॥१॥
जे बन सदा नवलते अब सब जीरण पात रहाईजी ॥
कोकिल कीर मोर भये व्याकुल डोलत बनके माईजी ॥
जिन्हें चराई आप कन्हाई फिरत दुखारी गाईजी ॥
जहां जहां गोदोहन कीनो सूंघत तहँ तहँ जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–युग सम बीतत पल हमें, सब ब्रज विरह अधीर ॥
ऊधो मन मोहन विना, धरैं कौन विधि धीर ॥

चौबोला–धरैं कौन विधि धीर श्याम गुण कहत सुनत सुखदाईजी
बैठेहि बीत गई निश सारी ऊधो अरु नँदराईजी ॥
भरि भरि लोचन डारत पानी ठाढी यशुमति माईजी ॥
कहत श्यामकी पाती आई घर घर होत बधाईजी ॥ १ ॥
ऊधोको हरि ब्रजहि पठायो निपट समीप रहावेजी ॥
कंचन कलस दूब दधि रोरी नंद सदन ले आवेजी ॥
गोप सखा सब कृष्ण उपासी सुनत सकल उठ धावेजी ॥
ऊधोको हरि रूप निहारी नर नारी सुख पावेजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज युवती पूजत सकल, विधिवत तिलक लगाय॥
जन्म सफल है आज हम, पुनि पुनि पद शिरनाय ॥

चौबोला-पुनि पुनि पद शिरनाय श्यामकी बूझत सब कुशलाईजी
नंद अवास भीर भइ भारी बैठे ऊधो राईजी ॥
ऊधो लखि ब्रज प्रेम थकेसे बोल सकत कछु नाईजी ॥
हकबकात चहुँ दिश सब ठाढे बूझत लोग लुगाईजी ॥ १ ॥
ऊधोकी लखिकै दशा सब ब्रज जन रहे अकुलाईजी ॥

क्यों ऊधो तुम कहत नहींहो कुशल रहैं दोउ भाईजी॥
हमें सुने विन प्रीति हरीकी इक क्षण युग सम जाईजी॥
ब्रजहि कृपाकरि सुन्दर श्यामा आवन कह्योकि नाईजी॥२॥

दोहा—सब ब्रजवासिन सों कह्यो, तब ऊधो धरधीर॥
सदा कुशल वे रहत हैं, हरि हलधर दोउ वीर॥

चौबोला-हरि हलधर दोउ वीर तुम्हें लिख दीनों पत्र कन्हाईजी॥
अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेशो कहतसो मैं तुम पाईजी॥
करि समाधि अंतर मोहिं ध्यावो गोप सखा मैं नाईजी॥
हौं अनादि अविगति अविनाशी व्यापक सब घट माईंजी॥१॥
निर्गुण ज्ञानानिमुक्त नहोई कहत वेद यह गाईजी॥
सगुण रूप तजि निर्गुण विचारो करि मनमें दृढताईजी॥
मिलिहौ ब्रह्म सुखहि सब जाई मिटहिं ताप दुखदाईजी॥
ऊधो कही जबहिं यह वाणी सुनि गोपी बिलखाईजी॥२॥

दोहा—तनक दूरही बस हरि:, भये और बलवीर॥
रही विरहकी बात कहि, बूड़ी मनु विननीर॥

चौबोला-बूड़ी मनु विननीर मिलनकी आशगई मन मानीजी॥
उपज्यो उर प्रति कठिन अंदेशो सुनत बात बिलखानीजी॥
फैल गई जहँ तहँ यह बानी कहत सकल अकुलानीजी॥
यह सब दोष लगेरी हमको कर्म रेखको जानीजी॥१॥
प्रेम सुधारससान सबनकों अबलिख ज्ञान पठायोजी॥
इकतो अंग रह्यो अति झुरके विरहाअग्नि जरायोजी॥
कोला हूते खेह करनको अब यह ऊधो आयोजी॥
रूप राशि हरि सब सुखदानी सो हमरे मन भायोजी॥२॥

दोहा—ब्रजके जीवन मूल हरि, कैसे विसरे जात॥
विछुरे हम दुखपात सो, हिरदे माहिं बतात॥

चौबोला–हिरदे माहिं बतात कहत यह चितवो मनके माईजी
वेहैं पूरण भरि सब ठाई घट घट माहिं समाईजी ॥
निर्गुण निराकार[1] निर्भोगी योगी जन नहिं पाईजी ॥
सो करि कृपा आय यहां ऊधो बीथिन[2] माहिं बहाईजी ॥ १ ॥
अबलन कारण श्याम पठायो अगह गहावन आयोजी ॥
जोसमदृष्ट एक रस मोहन तो कत चितहि चुरायोजी ॥
ऊधो यह हित किनहिं लगायो जो हिय माहिं बतायोजी ॥
निश दिन नैन दरशहित जागत इक पलपलकनलायोजी ॥२॥

दोहा–अब ये लोचन चहुँदिशा, चितवत विरह अधीर ॥
विलखि विलखि व्याकुल भये, भरि भरि डारतनीर॥

चौबोला–भरिभरिडारत नीर दृगनको हरि विन कछुनसुहाईजी
ऐसेहू दुख प्रगटत नाई श्यामहि कहत इहांईजी ॥
रहन देहु हमको ऐसेही अवधि आशके माईजी ॥
फिर चाहै नहिं पाइहो हमहीं डारे अगुण अथाईजी ॥ १ ॥
जो योगिनको भोग ऊधो तुम तियन सिखावन आयोजी ॥
हमतन भयो वियोग श्रवणते[3] सुनत अधिक दुख पायोजी ॥
एक कहति दूषण नहिं याको कुबजा याहि पठायोजी ॥
वाने जो कहि याहि सिखायो सो इन आय सुनायोजी ॥ २ ॥

दोहा–कुब्जा याहि सिखाइयो, दीनो इताहि पठाय ॥
कबहुँ न ऐसे हरि कहैं, कही जो इन ब्रज आय ॥

चौबोला–कही जो इन ब्रज आय बात यह ऐसि सुनेको माईजी॥
उठत शूल सुनि सही न जाई जो इन आय सुनाईजी ॥
कहत भोगतजि योग अराधो ऐसि न कहत कन्हाईजी ॥
ये सब विधवा[4]को व्यवहारा जप तप नेम सदाईजी ॥ १ ॥

१ आकार रहित। २ गली। ३ कान। ४ जिस्का पति मरगया।

युग युग जीवहु कुँवर कन्हाई हमरे शीश सुहावैजी ॥
अच्छत बसन भस्मको लावै को नइरीति चलावैजी ॥
हमरो योग नेम व्रतये है प्रभु पद प्रीति निभावैजी ॥
ऊधो तुम्हें दोषको लावै कुबजा नाच नचावैजी ॥ २ ॥

दोहा–व्रज युवतिनके वचन सुन, ऊधो रहे सकुचाय ॥
योग कथा कहि तियनसों, मनहीं मन पछिताय ॥

चौबोला–मनहीं मन पछिताय सुनतही रहि गयो शीश नवाईजी
प्रेम भरे सुनि वचन तियनके अति सुन्दर सुखदाईजी ॥
ये गुण हैं सब श्यामसुन्दरके तब जान्यो मन माईजी ॥
याही कारणके लिये हरि मुहिं पठयो इहि ठाईजी ॥ १ ॥
ऊधो सुनि गोपिनकी वाणी करी गुरू मन माईजी ॥
मन मनकर प्रणाम हरषाई बरषाने चले जाईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि हरि प्यारी अरु सब सखी सुहाईजी ॥
जिनके मन मोहन नँदलाला बात सबन सुनि पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मधुबनते आयो कोऊ, पठयो श्रीनँदलाल ॥
यूथ यूथ मिल सब चलीं, पिय सँदेश सुनि बाल ॥

चौबोला-पिय सँदेश सुनि बाल चलीं सब ऊधो मगमें पायोजी॥
रथ लखि कहत परस्पर नारी पुनि सुफलकसुत आयोजी ॥
ले गयो प्रथमहिं प्राण हमारो अब धौं कहा मन ध्यायोजी ॥
ऐसे सोच करत तिहिं क्षण तब ऊधो दरश दिखायोजी ॥ १ ॥
संगी सखा श्यामको चीन्हों रहीं चरण शिरनाईजी ॥
ऊधो लखि मन भये सुखारी आनँद उर न समाईजी ॥
तब ऊधो रथते उतरे अरु बैठे तरुकी छाईजी ॥
भई भीर सकल गोपिनकी अति आनँद मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुधि ल्याये व्रजराजकी, अतिप्रिय ताको जान ॥

प्रेम सहित पूजे सबन, करिकै बहु सनमान ॥
चौबो०-करिकै बहु सन्मान जोरकर पुनि पुनि विनय सुनाईजी ॥
कहिये ऊधो निज कुशलाई वसुदेव देवकि माईजी ॥
कहो कुशल बलराम कुशल हैं सुफलकसुत कुबजाईजी ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलाई नैन नीर भरि आईजी ॥ १ ॥
लखि गोपिनकी प्रीति ऊधो भये प्रेम मगन मन माईजी ॥
पुलकि गात अँखियन जल छायो गयो सब ज्ञान हिराईजी ॥
पुनि पुनि यहै कहत मन माईं हरिको बुझिये नाईजी ॥
ब्रजनारिनको योग पठायो चितते प्रीति मिटाईजी ॥ २ ॥
दोहा-पुनि ऊधो धर धीर मन, शोधि नैनको नीर ॥
दीनी पाती श्यामकी, कह्यो कुशल दोउ वीर॥
चौबोला-कह्यो कुशल दोउ वीर सुनतही गोपी सब हरषाईजी ॥
ले ले करन मिलत सब पाती कोउ दृग कोउ उर लाईजी ॥
काऊ लैकर शीश चढाई बूझति लिखी कन्हाईजी ॥
आति हित पाती श्याम सुन्दरकी सब मिल मिल सुख पाईजी १ ॥
बहुरि दई ऊधो करमाईं दीजे बांच सुनाईजी ॥
ऊधो बांचत हरिकी पाती कहत सबन समुझाईजी ॥
लागे करन प्रबोध सखिनसों ज्ञान कथा सुखदाईजी ॥
मोको हरि तुम पास पठायो आतम ज्ञान सिखाईजी ॥ २ ॥
दोहा-जाते पाप नियरात नहिं,विषय सुदेहु बिसारि॥
आपहि नर नारी हरिः, आप गृही ब्रह्मचारि ॥
चौबोला-आप गृही ब्रह्मचारी आपहि पिता आपही माईजी ॥
आपहि आप और नाहिं कोई पुत्र आपही भाईजी ॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी रानि आप नृपराईजी ॥
आपहि स्वामी दास आपही आपहि हरि सब ठाईजी ॥ १ ॥

आपहि ग्वाल आपही गाई आप दुहावन जावैजी ॥
आपहि भ्रमर आपही फूलहि आपहि जगत उपाईजी ॥
आपहि आप निरंतर होई रंक आपही रावैजी ॥
जिमि बहुदीप जोति है एकहि तैसोहि ब्रह्म सुहावैजी ॥ २ ॥
दोहा-इहि विधि हरिको ध्यावहीं, ब्रह्म समाधि लगाय ॥
जरा मरण मिटजात भ्रम, ब्रह्मानंद सुखपाय ॥
चौबोला-ब्रह्मानंद सुखपाय सुनतही रहीं सबै शिरनाईजी ॥
माँगति मनहु सुधारस तिनको दीनो गरल पियाईजी ॥
हरि संदेश सुन दारुण तिय सब रहीं सकल मुरझाईजी ॥
बोलीं बहुरि सँभार जोरकर ऊधो सों दुखपाईजी ॥ १ ॥
भली आय कुशलात सुनाई ऊधो ब्रजहि मझारीजी ॥
कछु इकहती मिलनकी आशा सो तुम दूर विडारीजी ॥
श्याम विरह तन पल पल छीजे दुख पावत हम भारीजी ॥
विन देखे वह मूरति प्यारी मुकुट पीतपट धारीजी ॥ २ ॥
दोहा-योग मुक्तिलै कहा करैं, ऊधो हम ब्रजबाल ॥
कोलिख पूजे भीत पर, छांडि श्री नंदलाल ॥
चौ०-छांडि श्री नंदलाल ऊधो हम तुमसों साँच बखानेजी ॥
हम अहीर गोरसके भोगी योग मुक्ति कहा जानेजी ॥
हमको भजनानंद पियारो प्रेम भक्ति मन मानेजी ॥
ब्रह्मा नंद सुख कहा विचारो ये दृग दरश लुभानेजी ॥ १ ॥
पुनि पुनि हमें वही सुधि आवैं नव किशोर नँदलालाजी ॥
कोटि ज्योतिं ता ऊपर वारैं हम सब ब्रजकी बालाजी ॥
अधर अरुण मुरलीधर श्यामा लोचन कमल विशालाजी ॥
क्यों विसरत ऊधो हम उनको मोहन मदन गुपालाजी ॥ २ ॥
दोहा-रूपराशि आनँद भरचो, सजल मेघ तनु श्याम ॥

और न जानत ब्रह्म हम, मोहीं सब ब्रजबाम ॥
चौबोला–मोही सब ब्रज बाम सखिन तब ऐसे कह्यो बखानीजी
सुनि ऊधो गोपिनकी वाणी बोले साजि सयानीजी ॥
जब लगि हृदय ज्ञाननहिं तब लगि जलकी लीक समानीजी ॥
विन विवेक सुख पाव न कोई स्वप्नहिं सम विन जानीजी ॥ १ ॥
नैन मूंदि चितवो मनमाईं रूप रेख जिहिं नाईंजी ॥
हृदय कमलमें ज्योति विराजै अनहदनाद बजाईंजी ॥
इडा पिंगला सुखमनानारी सहज शून्यके माईंजी ॥
नासा अग्र ब्रह्मको वासा ज्योति ध्यान तहां लाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–क्रम क्रम साध हुयोग तुम, भवसागर तरजाइ ॥
ऊधो हमें तजि नंद सुत, और न कछू सुहाइ ॥
चौबोला–और न कछू सुहाइ ब्रह्मको ज्ञानदेन तुम आयोजी ॥
हाथ पांव मुख नैन विहीना रूप नरेख वतायोजी ॥
तौ यशुदा करि काको जायो पलना काहि झुलायोजी ॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो चोरदही किन खायोजी ॥ १ ॥
कैसे गोद खिलायो हरिको तुतरे बैन बुलाईंजी ॥
ऊधो कहो जाहि तुम ताको नैनन सूझतनाईंजी ॥
श्री वृन्दावन धाम सुखद तजि नटवर भेष कन्हाईंजी ॥
को खोजै आकाश हमारे सुन्न समाधि लगाईंजी ॥ २ ॥
दोहा–मानहु हमरो वचन यह,जिन तुम होउ अयानि ॥
भजौ ब्रह्मतजि मोह सब, ह्वै हो ब्रह्मसमानि ॥
चौबोला–ह्वै हौ ब्रह्म समान आंधरी माया अति दुखदाईजी ॥
ज्ञान अनंत नैन सब बूझे मिलहिं ब्रह्ममें जाईंजी ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी वेदन साखि बताईंजी ॥

१ ज्ञान। २ नाक। २ जिसका अंतनहीं।

लगहि आगि जबको निज गृह तजि कोउ न धूरि उडाईजी ॥१॥
भक्ति विरोधी ज्ञान तुम्हारो सो हमको न सुहावैजी ॥
योग कहा सब ओढिं बिछावें दुसह वचन नाहिं भावैजी ॥
अबलन आनि सिखावत योगू यह अनरीति चलावैजी ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी मनाहिं परेखो आवैजी ॥ २ ॥

दोहा—ताही क्षण तहँ भ्रमर इक, निकटहि निकरयो आय ॥
तासों कहि कहि बात सब, ऊधो प्रतिहि सुनाय ॥

चौबोला—ऊधो प्रतिहि सुनाय कहति सब जो जाके मन भावैजी
कोउ ऊधोसों कोउ आली प्रति नाना वचन सुनावैजी ॥
निज निज अपनी उकति बनावैं जो जैसी मनचावैजी ॥
ऊधो भूले ज्ञान आपये उत्तर कहत न आवैजी ॥ १ ॥
सुनत वचन नारिनके ऊधो रहे मौन सो धारीजी ॥
बोल उठी ऐसे इक ग्वारी आय सुनो री सारीजी ॥
आयो मधुप देन पदनीको लियो सुयश इनभारीजी ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा सुत पति सब हितकारीजी ॥ २ ॥

दोहा—शीशजटा अरु भस्म तनु, निर्गुण हमें सिखात ॥
आयो छोह कर तियनपर, गृह तजि बनाहिं बतात ॥

चौ०—गृह तजि बनाहिं बतात सखी यह मधुपुरि वसत सुहायोजी
वे अक्रूर और ये ऊधो दोउ मिल जोट बनायोजी ॥
जानत भली गांसकी बाता इनहीं कंस मरायोजी ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई सो सब प्रगट दिखायोजी ॥ १ ॥
अब करि कृपा ब्रजहि उठधायो कियो काज सो चीनोजी ॥
अबलनयोग सिखावन आयो यह हमपर यश कीनोजी ॥
ऐसे एक कहति अरु ग्वाली दोउ मन इक कर लीनोजी ॥
तब अक्रूर अबहि ये ऊधो ब्रज सूधो कर दीनोजी ॥ २ ॥

दोहा–वचन फांसि फँसि हरि हरन, उन लियो रथ बैठाय ॥
हरलीनों इन गोपिकन, हती ज्ञान शर आय ॥
चौबोला–हती ज्ञान शर आय सखी इक ऐसे कहत सुनाईजी ॥
चहुँ दिश दावा योग कठिन इन देखहु दीन्हो लाईजी ॥
चाहत कहा कियोधों अब ये बनी कठिन अति आईजी ॥
कहति एक मधुकर ये हम सब बात तुम्हारी पाईजी ॥ १ ॥
करी भली करनी सो जानी हमें योग ले आयोजी ॥
इक हरि विरह रही हम जरके तापर लोन लगायोजी ॥
दई श्याम तुमरे कर पाती सुनि अति हियो सिरायोजी ॥
वहे जात मांगत उतराई उलटो न्याव चलायोजी ॥ २ ॥

लावनी।

हम दुसह विरह दुख पातहि योग पठायो ॥
मधुकर जानी सब बात नेह बिसरायो ॥
टेक–यह मिल्यो बातको छोर योग अब ल्यायो ॥
तब अधर सुधारस प्यावहु लाड लडायो ॥
जनु कीनों शिशुको खेलहि प्रथम बनायो ॥
बहुरो सोइ रीती करि हरि चलत मिटायो ॥
ज्यों कंचुकि अहि लपटात यों हित दरशायो ॥
मधुकर जानी सब. बात नेह बिसरायो ॥ १ ॥
बहुरो अहि सुरत न करी कंचुकी डारी ॥
ऐसेही हमको तजी श्याम बनवारी ॥
हरि करहु राज जहां जाउ तहां गिरिधारी ॥
वे लेहु अपन शिर भार कहति सब नारी ॥
अब न्हात न उखरहुवार यो वचन सुनायो ॥

मधुकर जानी सब बात नेह विसरायो ॥ १ ॥
वहु रंगी रह सुख माँहिं सदा जहँ जाई ॥
चातक पतंग इकरंग मीन दुख पाई ॥
दुख सहत मनाहिंके माहिं कहत नहिं काई ॥
मधुकर हम करिकै प्रीति रही पछिताई ॥
निबहेगी ऐसे जानि सबन मनलायो ॥
मधु कर जानी सब बात नेह विसरायो ॥ ३ ॥
मनहरयो श्याम मुसुकाय कहा धौं कीनों ॥
तब हँसि हँसिके हम सबहिन मिल मन दीनों ॥
अब कुबजाके गृह बसत सो सब हम चीनों ॥
हमसों छलकियो सो दाव कूवरीलीनों ॥
तनकहि उर चंदन धरि हारि वशकरि पायो ॥
मधुकर जानी सब बात नेह बिसरायो ॥ ४ ॥

दोहा–ऊधो नहिं जानी परै, भाग्यदशाकी वात ॥
विलपत ब्रजनारी सबै, कुब्जा हरि मनभात ॥

चौ०–कुबजा हरि मन भात असुरको खातबच्यो दियो डारीजी
अब कुलवधू कहावत सोई यह हरिकी गति न्यारीजी ॥
राजकुँवरि कोऊ हरि बरते सुन सुख पाती सारीजी ॥
कागी और मराल उजागर बन्यो साथ अतिभारीजी ॥ १ ॥
तजी लाज दोऊ अब खेलत बारहमासी फागाजी ॥
लौंडीकी डौंडी बाजी यह हांसी अरु अनुरागाजी ॥
आप भये वश में दासीके योग देन हमें लागाजी ॥
ऊधो यह अचरजकी बातें चतुर चचोरत आगाजी ॥ २ ॥

दोहा–ऊधो हरि यह काज करि, रह्यो त्रिभुवन यश छाइ ॥
आये ब्रज में असुरजे, मारे कुँवर कन्हाइ ॥

चौ०—मारे कुँवर कन्हाइ विष जल सबही ग्वाल जिवायेजी ॥
कालीनाग नाथ हरि तापर कमललादि लै आयेजी ॥
इन्द्रमान मलि ब्रजहि बचायो करपर गिरिहि उठायेजी ॥
जब विधि बालक वत्स चुराये तब हरि और बनायेजी ॥ १ ॥
धनुष तोरि गज प्रबल संहारयो मल्ल कंस लिये मारीजी ॥
कीनो उग्रसेनको राजा भये सुखी सुर भारीजी ॥
ऐसी कीरति करि सब नाशी दासी कीनी नारीजी ॥
कहां श्रीपति वे त्रिभुवन राई अखिल लोक सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रह्मा शिव इन्द्रादि सुर, करत निरंतर सेव ॥
कहां वह दासी कंसकी, हरि देवनके देव ॥

चौबोला—हरि देवनके देव दुहुँनको नीको बन्यो समाजाजी ॥
अब हरि ऐसे करिकै काजै मारत यदुकुल लाजाजी ॥
गावत है सब गीत जगत अब वा चेरीके काजाजी ॥
ऊधो यह अनुचित है भारी चेरीपति ब्रजराजाजी ॥ १ ॥
अजहूं चेरी तजैं हरीसों कहियो ऊधो जाईजी ॥
यह दुख कह्यो नजात कूबरी हमरी सौतिं कहाईजी ॥
ऊधो हरि रीझे धौं कैसे बोली अरु इक आईजी ॥
इक चेरी अरु कूबर पाछे नीकी लागत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जात हीन अरु कूबरी, करी सुहागिन ताय ॥
कहा सिद्धहो कूबमें, लिख किन हमें पठाय ॥

लिखकिन हमें पठाय कूबंको हमहूं यत्न बनावेंजी ॥
चलिकै हम मोहनके आगे टेढी चाल दिखावेंजी ॥
कहैं श्याम सोई अब करिहैं लोक लाज बिसरावेंजी ॥
तजैं निगोडी कुबिजा दासी गोकुल आनि बसावेंजी ॥ १ ॥
गोपीनाथ नाम क्यों धारयो जो हमको बिसरावोजी ॥

जो नहिं काज हमारे आवो तो कलंक कत लावोजी॥
जो पै प्रीति करी कुबिजासों तो ताके कहवावोजी॥
करी प्रीति तब सुगमाहिं पाई अब किन ताहि निभावोजी॥ २॥
दोहा—ज्यों गजको रद त्यों करी, हरि हमसों पहिचान॥
दिखरावनको आनहीं, काज करनको आन॥
चौ०--काज करनको आन एक सखी ऐसे वचन सुनावैजी॥
छांडि छुहारा दाख विविध फल विष कीरा विष खावैजी॥
यह दुख कहिये कासों जाई मनहिं समुझि रहजावेंजी॥
ऊधो कहा कहि तुम्हें सुनावैं हरि विन हम दुख पावेंजी॥ १॥
कत आये यशुदाके धामा रहते मथुरा माईजी॥
कत गोवर्द्धन कर पर धारयो लीनो ब्रजहि बचाईजी॥
बनमें कियो रासरस हरिने सो सुख वरणि न जाईजी॥
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई लीनो मन निठुराईजी॥ २॥
दोहा—जबते हरि ब्रजतजगये, तबते हम बेहाल॥
घटे अहार विहार मन, मिलन आश गोपाल॥
चौबोला-मिलन आश गोपालकि वीतत निशा गनत नभ तारेजी
दिवस तकत मग मधुवन तन अब देखि देखि दृग हारेजी॥
रही नहीं सुधि बुधि मनमाईं विरहानल तनु जारेजी॥
सुमिर सुमिर हरिके गुण ग्रामा अब दुख पात अपारेजी॥ १॥
कहँ लगि कहिये मधुप व्यथा निज निठुर भये बलवीराजी॥
तापर ल्याये योग सुनतही भये दुखीत शरीराजी॥
जिहिं व्यापै तनु जानत सोई कठिन विरहकी पीराजी॥
सुनि सुनि वचन भयानक अलि अब कैसे धारें धीराजी॥ २॥

लावनी।

क्यों धारैं मन धीर मधुप हम अबला सब ब्रजकी नारी॥

सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी ॥
टेक–जे कच फूल फुलेल सँवारे निजकर ग्रंथे गिरिधारी ॥
भस्म सानिकै जटा बढावन लिखपठयो अब बनवारी॥
रत्न जटित ताटंक सुहाये पहिराये निज हितकारी ॥
तिनकाननको ऊधोजी अब गाढिल्याये मुद्राभारी ॥
भालतिलक अंजन नकवेसर कहत तजहु अब सबनारी
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमेंसारी॥१
मृगमदमलय कुंकुमा केसर देहु सबन अब विसराई ॥
उर कंचुकी हारको तजिकै लीजै तन भस्मी लाई ॥
दई श्याम अतिहित भुज जिहिंगर अबसेली शृंगीआई॥
पहिरे जात न चीर सुभग सो लीजे भगोहो रँगवाई ॥
जामुख पान सुगंध खवाये मोहन निज करहित भारी॥
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी २
रस विवाद बहुतान तरंगा नाना विधि हरि सँगगाये ॥
मदन विलासा हास रस अधर सुधा हरि मुख प्याये ॥
तिनमुख मौन कौनविधि जीजैऊर्ध्व श्वासअबघूंटिआये
वेतो हरि हैं कठिन अति दाव घात उनके पाये ॥
मधुप तुम्हें ना चैये ऐसी जानलई बातें सारी ॥
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी३॥
तब बजाय मृदुबैन अर्ध निश बोल लई सब ब्रजनारी ॥
किये रास रस सुनावत कटुक वचन अब बनवारी ॥
मधुकर मधु माधोकी वानी माखी जिम हमलपटारी ॥
उड न सकीं तब कहैं किहिं सोचत अब मनमें सारी ॥
जिमि अहारवशमीन विचारी कंटकगिलत कठिनभारी
सुने भयानक वचन श्यामके दुख पावत मनमें सारी ४

दोहा–अटकत कुटिल सो कंठमें, बाढत दुख उरमाहिं ॥
मनहीं मन पछितात पुनि, काढ सकत कोउ नाहिं ॥
चौ०–काढ सकत कोउ नाहिं तैसही वधिक सुनाद बजावैजी ॥
मृग गण मोहि समीप बुलावै ताहि हतन मन चावैजी ॥
बहुरि करत शर धनुष संधाना तुरतहि मार गिरावैजी ॥
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै निशिको तिमिर नशावैजी॥ १ ॥
रूप लोभ रस प्रगट दिखावै क्षणमें देत जराईजी ॥
जिमि ठग मद मोदकहि खवावै पथिकहि प्रीति जनाईजी ॥
रस विश्वास बढाय हरतहै प्राण ग्रथहि लैजाईजी ॥
जिमि मृदु मुसकन मनहिं चुरायो खग जिमि हमहिं बुझाईजी२ ॥
दोहा–पाछे यह करनी करी, मोहन मदन गुपाल ॥
योग छुरी गरमें दई, कियो कपट नँदलाल ॥
चौबोला–कियो कपटनँदलाल हमहिंसों कपट प्रीति विस्तारीजी
बई विरह विष बेलि ब्रजहिमें रसकी ऊख उखारीजी ॥
कहिये कहा बखान मधुप अब जिन्हें बान यह पारीजी ॥
हरि जो हमरे प्राण श्यामके हम भावें नहिं सारीजी ॥ १ ॥
यह सुनि कह्यो और इक आली मधुपहि कहा सुनावैजी ॥
उनहींको संगी यह जानो दोउ तनु श्याम सुहावैजी ॥
वे मोहत मुरली ध्वनिजग यह गूंजत दल हरषावैजी ॥
वेनिश्च वसत प्रात कहुँ आने यह तजि सुमन सिधावैजी ॥२॥
दोहा–युगल चरण उनके बने, और भुजा शुभचारि ॥
इनके पटपद सोहहीं, दोऊ विपिन विहारि ॥
चौबोला–दोऊ विपिन विहारि श्याम तनु पीतांबर छविछाईजी
इनके पीत पंख दो आछे सुन्दर सुभग सुहाईजी ॥
वे माधो यह मधुप कहावत भेद नहीं कछु राईजी ॥

वेठाकुर ये सेवक दोऊ मिले एक गुण आईजी ॥ १ ॥
कहा प्रतीत कीजिये जिनकी याही प्रकृति सुहाईजी ॥
निरस जान भाजत पलमाई दया धर्म कछु नाईजी ॥
मन दे सरवश प्रथम चुरावै बहुरो काज न आईजी ॥
इनसों प्रीति करो मन जैसे भुसकी भीत उठाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इकसार ॥
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिनकी चटसार ॥

चौबोला—कपटिनकी चटसार जलद अहि देखो करि मनमाईजी
भ्रमर काग कोयल कपटी यह सब कवियन मिल गाईजी ॥
राखि पिटारे जो अहिकारो अति हित करि पय प्याईजी ॥
कुल स्वभाव सों डसि भाजि जाई यदपि लाज कछु नाईजी॥ १॥
जलद सलिल बरषत चहुँ धाई भरत सरित सर माईजी ॥
निश दिन ताहि पपीहा ध्यावे अतिशय प्रीति जनाईजी ॥
एक बूंदको पियतरसाई भ्रमर मालती चाईजी ॥
जब रसहीन होत वा माईं तब तिहिं छांड़ि पराईजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनत कथा पिक कागकी, अंडन सेवकरात ॥
बड़े होत उड़जात ढिग, बैठत निज पितुमात ॥

चौबो०—बैठत निज पितु मात यहै सब कारे हरि पर वारीजी॥
सबकी उपमा अरु गुण पटतर कविजन न्याय उचारीजी ॥
अलिहि काग पिक जलद अही सब ये कारे तनु भारीजी ॥
समुझी आज बात यह सारी कपट खानि गिरिधारीजी ॥ १ ॥
मृदु मुसकन विष डारि गये हरि जिमि भुजंग भजिजाईजी ॥
जिमि कोकिल सुत कागतजे तिमि नंद यशोदा माईजी ॥
जिमि अलि रस ले जात सुमनको तिमि हम तजी कन्हाईजी ॥
चातकलौं हम रटत सकल अब घन लौं धारि निठुराईजी ॥

दोहा–ऊधो सुनिये बात तुम, कहूं एक उपखान ॥
बाज्यो अब यह तांत सो, लियो राग पहिचान ॥
चौबोला-लियो राग पहिचान तुमहिंसे हरि आगे अधिकारीजी॥
क्यों नहिं दुख पावें ब्रजनारी जानी बात तिहारीजी ॥
कहत सुनत लागत अति मीठो गरलहुते कछु भारीजी ॥
पायो छोर कपटको निर्गुण लिख पठयो बनवारीजी ॥ १ ॥
योग जहां अधिकारहि पावै तहँ ये क्यों न बतायोजी ॥
राजकाज चलिये नहिं तुमसों ऐसे वचन सुनायोजी ॥
करिये पोष आपनी काया करी कृपा इत आयोजी ॥
जो तुमने हमरे हित आन्यो सो हम शीश चढायोजी ॥ २ ॥

लावनी।

सुनिकै सब ब्रज लोग अनंदे नर नारी सब सुख पायो ॥
अब सँभारि यह लीजे अपनो दीजे जिन यहँ पठवायो ॥
टेक–उनहींमें यह योग समै है इहां निरवैहैं नाहिं काई ॥
हम ब्रजवासी गुवारी योग सोग जानति नाईं ॥
अंध आरसी बधिर ध्वनि अरु रोग ग्रसित तनुभोगाई॥
ऊधो तिनको न्याव है हमें योग कहासिखराई ॥
हमें योग जो योग सोई अब दीजै हमरे मनभायो ॥
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो १
कहे न जाने रोग वैदसों कहा कहिये कहि समुझायो ॥
जाहु भले तुम दोऊ अपनो स्वारथ मनचायो ॥
निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो कौने तुम इहांपठवायो ॥
और कहो किन संदेशो जो हरिको ब्रजमेंल्यायो ॥
तब अक्रूर आय यह कीनों सब ब्रजको सुखलेधायो ॥

अब सँभारि यह लीजे अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो २
अन्न छुड़ाय खवावत माटी तुम कीनो ऊधो आई ॥
ज्ञान कथा जो हती श्याम कत कियो रास बनके माई ॥
मन हरलीनों बेनु बजाई अर्ध निशा सब बुलवाई ॥
लीला रसकी करी श्याम अब ज्ञान कथा यह कहांपाई ॥
तब समता क्यों नहिं उर धारी कंसहि मार यमुन बहायो
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो ३
हुती कछू आशा सो खोई बूझि परीं बातें सारी ॥
सब पर पाटी पढे एकही एक एकते अति भारी ॥
हम बावरी चलीं नहिं त्योंहीं ज्यों चालत जग व्यवहारी॥
मनकी मनमें रही बात हम कहैं काहि मनकी प्यारी ॥
हम गुहार जितहीको चाली तितहीते कछु भय आयो ॥
अब सँभारि यह लीजै अपनो दीजै जिन यहँ पठवायो ४

दोहा—जैसी तुम हमसों करी, जानतहै सब कोय ॥
पावोगे अपनो कियो, हम सहि लीनों सोय ॥

चौ॰ हम सहि लीनो सोय ऊधोजी पूँछत हम तुम पाईजी ॥
जो हरि हमको योग सिखावें तो कहियो तुम जाईजी ॥
करिकै कृपा आप ब्रज आवें परगट योग जनाईजी ॥
जो उपदेशी निकट नहीं तो श्रोता मनकि मिलाईजी ॥ १ ॥
मंत्र देन लागे विन कानन कहूं न यह सुनि पाईजी ॥
जब लगि युक्ति न सिद्ध बतावें साधक पै किम आईजी ॥
हम गोकुल वे मथुरा खेती होत संदेशन नाईजी ॥
करी श्याम माया यह इतनी और करैं सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—दरशन प्रथम दिखायकै, करैं पवित्तर धाम ॥
योग जानि करैं नग्र तजि, सघन कुंज विश्राम ॥

चौ०–सघन कुंज विश्राम सुआसन मौन नेम मन लावेंजी ॥
जप तप संयम ब्रत व्यवहारा वनहींमें बनि आवेंजी ॥
योग अंग कहियत हैं जे सब साधन सिद्ध सधावेंजी ॥
तब प्रवोध कर माथ छुवावें होय सिद्ध फल पावेंजी ॥ १ ॥
तब तो खेले सोहें करि करि अरु राख्यो कछु नाईजी ॥
अब यह योग मिल्यो कहां ऊधो कहियो हरिसों जाईजी ॥
जहँ स्वारथ तहँ सगुण हमहिंको निर्गुण ज्ञान सिखाईजी ॥
लिख पठयो निर्बाण याहि हम चाटें सहत लगाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

बोली और एक रिस मानी मधुकर हमरी सुनिलीजै ॥
मुख देखेको न्याव न कीजै परमधुपी जातनदीजै ॥
टेक–बीचहि परे सत्य सो भाषे राव रंक कर इकसारी ॥
सूझ परतहै दिवस निश बात कहो हरिको प्यारी ॥
ब्रज युवतिनको योग सिखावत वृषभ छोरि सुरभीभारी
रेकृतघ्नि लंपट व्यभिचारी कहा यह लीला विस्तारी॥
हम जान्यो अलिहै रसभोगी या योगीको कहाकीजै ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जातनदीजै ॥१॥
जो भयभीत होय लखि माला कैसे छुवैं भुजंगभारी ॥
कहां यह अबला दिशा दिगंबर क्यों शठ बकलझाडारी
साध होय तो उत्तर दीजै कहा कहैं तोहिं कहिहारी ॥
भई बायसी देखि तोहिं डरपत हम सब ब्रजनारी ॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै तब पुनि औरन सिखदीजै ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जात नदीजै ॥२॥
कत श्रमकरि बकबकहि करतहै तुम्हरी बात सुनतनाईं

उठ किन जावै इहां ते बन कारो यो होजाई ॥
कहँ परमारथ कहां विरह यह देखिमूढकछुचित्तलाई॥
खवावतहो दही तुम राजरोग है कफताई ॥
बोली और एक कोउ नारी ऊधोजी अरु सुन लीजे ॥
मुख देखेको न्याव नकीजै परमधुपी जातनदीजै ॥३॥
प्रथमहिं ब्रजकी दशा विचारो योगसिद्ध पुनिसिखरावो
जा कारण तुम पठये माधो सो विचार जियमें लावो ॥
केतिक दूर विरह परमारथ देखि यथारथ समुझावो ॥
सदा रहतहो सन्तन पासा परम चतुर तुम कहवावो॥
जल बूडत पुनि पुनि अकुलाई फेनपकरकर कहालीजै
मुख देखेको न्याव न कीजै परमधुपी जातन दीजै॥४॥
दोहा–सब विधि हरि सुखके सदन, सुन्दर कुँवर कन्हाइ ॥
ब्रजको जीवन नन्दसुत, कैसे विसरचो जाइ ॥
चौबोला–कैसे विसरचो जाइ योग अरु मुक्ति हमें प्रिय नाईंजी॥
याकी मुरली पर सब वारैं कोटि योग पलमाईंजी ॥
तुम निर्गुण गुण कीरति गाई कहँ लगि करैं बड़ाईजी ॥
अतिहि अगाध पार नहिं आवे मन बुधि कर्म सुहाईजी ॥ १ ॥
रूप रेख वपु वरण न जासों कैसे नेह निभाईजी ॥
बिनहीं तोय तरंग अली अरु विन चेतन चतुराईजी ॥
अबलों ब्रजमें हुती नहीं अब करी मधुप तुम आईजी ॥
अब मधुकर हरि विन क्षण हमको कल्प समान विहाईजी ॥२
दोहा–नहिं सुहात नँद नंद विन, कहो विविध विधि कोइ ॥
श्रक चंदन क्यों सुख लहै, अन्न क्षुधारत जोइ ॥
चौ०–अन्न क्षुधारत जोइ सखी इक ऐसे वचन सुनावैजी ॥
कत बेकाज बकत है आली कहा तेरे मन आवैजी ॥

कहिये तिहिं जो होय विवेकी यह निज टेक चलावेजी॥
फटके भुसी हाथ कहा आवे क्यों बक मूंडपचावेजी॥ १॥
तजि रसगेह नेह हरि पियको निर्गुण ज्ञान सिखाईजी॥
ज्योति ज्योतिं खोजत तनु माई लखत प्रगट कछु नाईजी॥
श्रवण सुनत जाकी मुरली ध्वनि शिव ब्रह्मा भरमाईजी॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी बन विचरे सुखदाईजी॥ २॥
दोहा–रास विलास किये विविध हरि, नाचे संग कन्हाइ॥
लोक लाज कुल कानि तजि, हम हरि हाथ विकाइ॥
चौबोला–हम हरि हाथ विकाइ प्रेमको देत सुवाग कटाईजी॥
बोवत योग जहरकी बेली मधुकर ब्रजके माईजी॥
चोपद होय ताहि समुझैये षटपद क्यों समुझाईजी॥
छाछो दूध बराबर जाके कहा कहत या पाईजी॥ १॥
हम विरहन विरहानल जारी और जराई कामाजी॥
सुख तो तबहीं पावें हम सब फिर नाचें सँग श्यामाजी॥
दृढ व्रत लीनो श्यामसुन्दर सों छांडि जगत घर ग्रामाजी॥
मुक्तिहमें नाहिं चाहत चाहत सोई हरि सुखधामाजी॥ २॥

लावनी।

रेमधुप कुटिल कुविचारी सुनहु हमारी॥
और न हम जानत कोय छांडि बनवारी॥
टेक–हम सांच कहत हैं तोहिं सो तो मन आवे॥
जो छांडि श्रीनँदलाल औरको ध्यावे॥
मनु बसत सुरसरी तीर कूंप जल चावे॥
को सुने तिहारी सीख यह कहा सुनावे॥

१ ज्ञानी। २ देह। ३ भौंरा। ४ गंगा। ५ कुवाँ।

तुम योग पोट आनी सो हमें न प्यारी ॥
और न हम जानत कोय छांडि बनवारी ॥ १ ॥
लेजाहु मुक्ति काशी तहँ मुक्तहि चाई ॥
हमें हरि दरशनकी भूख मुक्ति नाभाई ॥
पीवत नहिं जबलों नीर जो मनाहिं अघाई ॥
तोदिखरायो तिहिं ओस प्यास किमजाई ॥
अब तजहु सोच मिलिहैं हरि यों कह सारी ॥
और न जानत हम कोय छांड़ि बनवारी ॥ २ ॥
हरि आवहिं हमरे हेतु वे ब्रजहि कन्हाई ॥
हितकर हमरे दुख हरैं श्याम सुखदाई ॥
धारें पग ब्रज ब्रजराज सोकरहु उपाई ॥
हम प्रगट देखि मृदु रूप रहैं सुखमाई ॥
यह सांचो तुम्हरो योग कह्यो विस्तारी ॥
और न जानत हम कोय छांड़ि बनवारी ॥ ३ ॥
कह्यो गर्ग हमें सांचो सो नंददुलारो ॥
ब्रज जीवन प्राण अधार हमारो प्यारो ॥
नख शिख सब अंग बिसाल प़ीतपट वारो ॥
अब तजहु अली यह और उपाव तिहारो ॥
हमें है तिनहीं सों काज कहति सब नारी ॥
और न जानत हम कोय छांडि बनवारी ॥ ४ ॥

दोहा—जानत मधुकर प्रीति रस, अब कत होत अयान ॥
फिर आवत हो सब सुमन, बँधतकमलकिम आन ॥

चौ०-बँधत कमल किम आन कमलदल फोरि निकारि किनजाईजी
जे बल काठ फोरि घर करहू कमल देखि भरमाईजी ॥
रँगे श्याम रँगजे पहिलेते चढत और रँग नाईंजी ॥

पारस परस लोह सो बहुरो किमि चुंबक लपटाईजी ॥ १ ॥
सुनी जिन्हें मुरली तिनको किम कीगरितान सुहाईजी ॥
बसे जासु उर सगुण कन्हाई तहां निर्गुण न समाईजी ॥
यह मन श्याम स्वरूप लुभानो योग चहत हम नाईजी ॥
सिंह सदा आमिष रुचिमाने तृण न भखें मरजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—द्वै दृग रूप विराटके, कहियत एक समान ॥
ताहूमें हित चंद्रमा, नहिं चकोर हित भान ॥

चौबोला—नहिं चकोरहित भान सुलोचन भये अधीन कन्हाईजी
जल बिन डारें मीन दूधमें सुखपावत सोनाईजी ॥
नहिं मानत ये नैन हमारे देखे बिन सुखदाईजी ॥
भये देखि छबि मीन नीर जिमि मुरली वश मृग आईजी ॥ १ ॥
वदन इन्दु छबि कुमुद चकोरा तन घनमोर सुहानेजी ॥
वहै रूप परगट जब देखैं जन्म सफल तब मानेजी ॥
विगर परे मन मधुप हमारे ज्ञान न हम मन आनेजी ॥
ललित त्रिभंग रूप रससाने खरे चकित जग जानेजी ॥ २ ॥

दोहा—श्वान पूंछ नहिं समरहै, करो यत्न पचिकोइ ॥
सुनै कौन निर्गुण मनहिं, गये श्याम सँगसोइ ॥

चौबोला—गये श्याम सँगसोइ एक मन एकहि रूप कन्हाईजी ॥
अटक्यो मन हरिसों अब हमरो तजत एक क्षण नाईजी ॥
जो होतो दूजो मन कोऊ ले धरती तहां याईजी ॥
ऊधो हरि हैं ईश हमारे कैसे विसरे जाईजी ॥ १ ॥
जिनके मन दशवीस तिन्हें यह योग दीजिये जाईजी ॥
कत डारतहो खीस आय तुम ऊधो ब्रजके माईजी ॥
गुणकर मोही श्याम हमारे को निर्गुण निरवाईजी ॥
किये जन्मके काज ऊधो अब तजिहैं नाहिं कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहत सुगम तुम बात मधु, कहतहि कर कठिनाइ ॥
जानत चंदन सम अनल, सतीहोत सुखपाइ ॥
चौबोला—सती होत सुख पाइ तासुकी तपत और सियराईजी॥
कहै कौन पाछे पुनि आई दुखकी सुख सो पाईजी ॥
कुसुम लता सम खड्ग सुहाई जात सुभट रण माईजी ॥
को अब करै तासु निरवारा तजत प्राण सो जाईजी ॥ १ ॥
दुख सुख हानि लाभ नाजाने मनमोहन मन भावैजी ॥
प्रेम पंथ ऊधो अति सूधो निर्गुण इहँ नहिं चावैजी ॥
नेह नहोत पुरानो नित नव सरित प्रभाव सुहावैजी ॥
निरखहिं आनँद रूप छकी जल थल न मीन पग आवैजी ॥ २ ॥
दोहा—बूड रहतहै दिवस निश, मीन सिंधुके माहिं ॥
ऊधो यह अचरज लखो, नीर पियत सो नाहिं ॥
चौ०—नीर पियत सो नाहिं दिनहिं दिन बढ़त कमल जलपारीजी॥
हरिं छवि हगन लालसा भारी निरखैं कुंज विहारीजी ॥
वसे गुपाल हृदय अंबुज अलि निकसत नहिं पचिहारीजी ॥
योग कथा हमसों जिन भाषो ऊधो बारहि बारीजी ॥ १ ॥
ताकी जननी छार भजै अरु तजिकै कुँवर कन्हाईजी ॥
कोऊ कछू कहो किन हमसों हमरे मन यह भाईजी ॥
रहो प्रीति नँदलाल श्याम सों और जाहु सो जाईजी ॥
रहै प्राणतन प्रेमहिं खोई कौन काज पुनि आईजी ॥ २ ॥
दोहा—विना प्रेम शोभा नहीं, निशि गये शशि न सुहाइ ॥
विना प्रेम जग खग बहुः, चातकइक रट लाइ ॥
चौबोला—चातक इक रटलाइ प्रेम वश रहत मीन जल माईजी॥
नैन अछत देखहु जग बर्णत तजत नीर क्षण नाईजी ॥
हम ते प्रेम दियो नाहिं जाई दुहूभांति यश पाईजी ॥

मिलहिं श्याम तो अधिक भलाई नातर जगयशगाईजी ॥
वर्णहीन घट जात गँवारी गोकुलकी हम ग्वारीजी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा बैठे पांति हमारीजी ॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता सो हमरे हितकारीजी ॥
तिन्हें संग ले रास विलासी मुक्ती कौन विचारीजी ॥ २ ॥

लावनी।

यह सुनि बोल उठी इक नारी मेरो बुरो न कोउ माने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने ॥
टेक–दादुर कमल बसत इक ठौरी पहिचानत आपुस माईं॥
अलि अनुरागी जानि आपनो आप बँधावत है आई ॥
जाने कहा सवाद बातको गूंगो बोल सकत नाईं ॥
मानहु काढ्यो घास जानिये, कियो प्रेम इनके पाईं ॥
धनि धनि ऊधो तुम बड़भागी हरिसों प्रेम नहीं माने॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने १
पुरइन वसत यथा जल माईं जलको दाग लग्यो नाईं ॥
गागर. नेहा नीरमें जैसे अपरसरह आई ॥
पैरत नदी बूंद नाहिं लागी नेक रूप दृष्टि न पाई ॥
हम ब्रजनारी अयानी ज्यों गुडचींटी लपटाई ॥
ऊधो कासों लगन वखाने लागे बिन अब को जांने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने २
पशु वेदन ज्यों मनमन दहिये हृदयसोचनितअतिभारी
पीरलगनकी सबहिते यत्न रहित दुख सुख न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावै वेद कहा कह विस्तारी ॥
घायल पीरा जानिये लग्यो घाव जातन पारी ॥

गजकहुँ[1] बंधत कमलके सूते रुकत न प्रेम कह्योमाने
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहा रस पहिचाने ३
यद्यपि समुझाये बहुतेरे हमकरि मनहिं कठिनताई ॥
तदपि न क्योंहूं भूलहिंऊधो श्यामसुन्दर छविमनभाई
क्यों सुख पावें प्राण पलक नहिं लागत नींदनहींआई
लगे बरषही जान ऊधो अब बिन देखे वह सुखदाई ॥
तबषटमासरासके माई एक निमिषसम नहिं जाने ॥
रसकी बातें रसिकहि जाने निरस कहारस पहिचाने ४

दोहा–अब औरै गति ब्रजहिमें, भइ विन कुँवर कन्हाइ ॥
हमको ऊधो इक पलक, कल्प समान विहाइ ॥

चौबोला–कल्प समान बिहाइ हरी सँग तब बनमें सुख पाईजी॥
अब ब्रजमें यह दशा हमारी अतिहि कठिन बनिआईजी ॥
ज्यों देवी उजार पुरमाई को पूजत तिहिं जाईजी ॥
कहत और जोबन अब ऐसे चित्र अँधेरे माईजी ॥ १ ॥
तब शशि अति सीरो[2] अब तातो भये सुखहि दुखदाईजी ॥
कत करि प्रीति गये मनभावन तासों हम दुख पाईजी ॥
फिरि फिरि यहै समुझि पछिताई आवन कह्यो कन्हाईजी ॥
याही आश प्राणन माई बारिक मिलिहौं आईजी ॥ २ ॥

दोहा–अति कठोर हृदय भये, फटे नबिछुरत कान्ह ॥
भली हमाहिंते जलचरी[3], तजत नेह वश प्रान ॥

चौबोला–तजत नेह वश प्राण ऊधो प्रीति रीत नहिं पाईजी ॥
तब ब्रजनाथ तजी दुख मानी छांड़ि गये सुखदाईजी ॥
ऊधो तुमसों चूक आपनी कहँ लगि कहैं सुनाईजी ॥
बसी दाहिने सूक सबै हम मानहुँ ब्रजके माईजी ॥ २ ॥

१ हाथी। २ ठंढा। ३ मछली।

मोहन मदन गुपाल लालसों ऊधो कहियो जाईजी ॥
एक बार ब्रजकी दशा तुम नैनन लखहु कन्हाईजी ॥
बोली और एक ब्रजबाला भली करी सुखदाईजी ॥
अब ब्रज कबहूं आवें नाहीं मथुराहि रहे सदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऊधोजी यहँ ब्रजहिमें, चलि अब उलटी चाल ॥
देखतही दुख पावहीं, मोहन मदन गुपाल ॥
चौबोला—मोहन मदन गुपाल ऊधो अब कहियो इहाँ न आवैजी
चन्दन पवन सेज सब ताती शशि सूरजसम दहावेजी ॥
भूषण वसन अनल सम लागत गृह बन मन नहिं चावेजी ॥
जित तित मार द्रुमनकी डारी धनु शर ले सब धावेजी ॥ १ ॥
हम तो न्याय सहैं दुख एतो ब्रजकी ग्वारि कहावेंजी ॥
वे प्रभु भोग संयोग गुपाला क्यों इतनो दुख पावेंजी ॥
जान्यो सब परपंच तिहारो कहि संदेशाकिन जावेजी ॥
जल मथ सुन्यो न माखन आवत बातन कहा भरमावेजी ॥२॥
दोहा—सगुणी निकटहि लखत तिन, निर्गुण ओट बतात ॥
प्रभु पूरण सबमें कहो, सुनो हमारी बात ॥
चौबोला—सुनो हमारी बात आप किन आवागमन मिटावैजी ॥
यहां कौन वहां कौन ऊधोजी को आवै को जावैजी ॥
योगी योग समुद्रहि माई खोजेहूना पावैजी ॥
सो यशुदाके प्रेम विवस हरि निजकर आप बँधावैजी ॥ १ ॥
हम गुवाल गोकुलके बासी सब गोपाल उपासीजी ॥
राजा नन्द यशोदा रानी यह यमुना सुखराशीजी ॥
गिरिवर धारी मित्र हमारे तिन सँग रास विलासाजी ॥
यहां न योग विराग उपासी अष्ट सिद्ध नव निध दासीजी ॥२॥
दोहा—हम सब भूखी प्रेमकी, हमें न मुक्ति सुहाय ॥

लोग सयाने होंय तिन, उपदेशहु तुम जाय ॥
चौबोला–उपदेशहु तुम जाय ऐसेही हम अपनी रुचि मानीजी
रहिहैं विरह बाय बौरानी अब हम यह मन आनीजी ॥
निश दिन स्वपने सोवत जागत रटहिं श्याम सुखदानीजी ॥
बालचरित्र किशोरी लीला सकल सुखनकी खानीजी ॥ १ ॥
सुमिर सुमिर हरिके सुख सोई मरिहैं सब रट लाईजी ॥
ज्यों घट प्रथम अनल तनु तावै पुनि रस भरे सुखपाईजी ॥
कृष्ण प्रेमके पंथ चलैं तब को दुख सुखहि डराईजी ॥
ऊधो मीनहिं नीर विना जिमि और कछू न सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–एकसखी ऐसे कह्यो, अपनो काज बनाय ॥
दिनाचार येऊ करो, मिलहिं श्याम जो आय ॥
चौबोला–मिलहिं श्याम जो आय योगहू धरिये सब ब्रजनारीजी
जटा बनाय भस्म तनु साजैं मूँदहिं दृग मिल सारीजी ॥
शृंगी सेली अरु मृगछाला कंथा माला धारीजी ॥
धर धीरज सन्मुख शर सहिये भाजे नाहिं उबारीजी ॥ १ ॥
ऊधो तुम जो कह्यो सो कीनो कहति एक सखि आईजी ॥
नैन मूँदके ध्यान लगायो इत उत मनहिं चलाईजी ॥
उरझ रह्यो नँदलाल प्रेम वश फँस्यो सो सुरझत नाईजी ॥
जो हरि मिल जाते तो योगहु लेती शीश चढाईजी ॥ २ ॥
दोहा–पहिले दीजै ले तिन्हैं, पठयो तुमहिं सिखाय ॥
लेहिं निबेरहु आप हरि, नाहिं हमते निरवाय ॥
चौबोला–नाहिं हमते निरवाय योग यह तुमसों कियोवखानाजी
जान्यो गयो न पंच मुखहिंसों ब्रह्मरंध्रतजि प्रानाजी ॥
हमहिं दिखावहुं ज्योतिं सोई अब हम उर जाको ध्यानाजी ॥
ऊधोकहा सिखावत हमहीं निपटहि छूछो ज्ञानाजी ॥ १ ॥

ऊधो जबते श्याम निहारे योगी नैन हमारेजी ॥
शिखा सीख गुरुजनकी त्यागी लाज जनेउ उतारेजी ॥
दशा दिगंबर मन अनुरागे घूंघट वश न उघारेजी ॥
सजत समाध रूप टकलाये भये सिद्ध अति भारेजी ॥ २ ॥
दोहा–तामें करता विघ्नके, पचिहारे पितु मात ॥
और योग जानत नहीं, सोई श्याम सुहात ॥
चौबोला–सोई श्याम सुहात हमारे वह मूरति मनभाईजी ॥
नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे राजत हम मन माईजी ॥
गयो कौन हमको तजि इहँते किनकी बात चलाईजी ॥
रजक मार किन धनुषहि तोरचो द्विरद पछारचो जाईजी ॥१॥
रंगभूमि किन मल्लपछारे कंसहि मार बहायोजी ॥
उग्रसेन किन वन्दि छुड़यो सो सब जग यश गायोजी ॥
को वसुदेव देवकी जायो किन तुम ब्रजहि पठायोजी ॥
कुंडल मुकुट गुंज उर राजे गोकुल श्याम सुहायोजी ॥ २ ॥
दोहा–को पूरण को अलख गति, को गुणरहित अपार ॥
करत वृथा बकवाद कत, इह ब्रज नन्दकुमार ॥
चौ०–इह ब्रज नन्दकुमार बनहिंमें जात चरावन गाईजी ॥
दिन उठ प्रात सहित बलरामा ग्वालनके सँग माईजी ॥
संध्या समय श्याम सुखदाई आवत वेनु बजाईजी ॥
ब्रज बस जन्म सफल कर लेखो जिन मथुरा मन लाईजी ॥१॥
ले हो कहा जाय प्रभु तामें परिहो विपता माईजी ॥
निरखहु गोकुल जाय कन्हाई माखन खात चुराईजी ॥
कैसे दान द्विजनको दीनो कर उत्सव नँदराईजी ॥
कैसे गोपीजन सुनि धाई पट भूषण पहराईजी ॥ २ ॥

१ दिशाही जिसके वस्त्र अर्थात् नंगा। २ थकगये। ३ ब्राह्मण।

दोहा-गोप ग्वाल आये किमिः निर्तत भेष बनाइ ॥
कैसे दधिको कीच करि, सब ब्रजभई वधाइ ॥
चौबोला-सब ब्रजभई बधाई कैसे बाल विनोद उपायोजी ॥
कैसे गोवर्धन करलीनो डूबत ब्रजहिं बचायोजी ॥
कैसे दधिको दान चुकायो शरदरास उपजायोजी ॥
यह रस प्रेम कथा चित दीजै निरस कहा ले आयोजी ॥ १ ॥
निगम नेति निर्गुणको ध्यावो सुनिये ऊधो राईजी ॥
क्योंनहिं प्रगट दरश चितलावो निरखहु रूप कन्हाईजी ॥
भावतहै जो योग कृष्णको सो देखहु हम पाईजी ॥
ऊधो सबतन खेह कीजिये सुमति होय चित लाईजी ॥ २ ॥
दोहा-बैठो मनहिं बटोरिकै, सब अँग करिकैकान ॥
तो यह अरथ सुनावहीं, तजहु ज्ञान अभिमान ॥
चौबोला-तजहु ज्ञान अभिमान कहाति इक ऐसेवचनसुनाईजी
रूंधे श्वास न शृंग बजावें जटा न भस्म लगाईजी ॥
नहीं वेद नहिं पढैं पुराना शम दम नेम न ध्याईजी ॥
हम श्रीगोकुलचंद्र अराध्यो प्रेम योग मन लाईजी ॥ १ ॥
मन क्रम वचन और ना जानें दुख सुख जग मिथ्याईजी ॥
अग्नि आंच गुरुजन बच सरसी मान अपमान न ल्याईजी ॥
उठत धूम उपहास विशेषी हनति तापतनु आईजी ॥
कर्म धर्म कामना नशाई विनवत पद सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा-अंग माधुरी हृदय धरि, प्रीति समाधि लगाय ॥
निरख रहत हरिकी छबी, अति अनुराग बढाय ॥
चौबोला-अति अनुराग बढाय सरगुण रूप रंग रस भावेजी ॥
भ्रुकुटी नैन नैन लगि लागे निर्गुण हमें न सुहावेजी ॥
हँसन प्रकाश सुमुख कुंडल द्युति शशि सूरज छवि छावेजी ॥

मुरली अधर मधुर ध्वनि सोई शब्द अनाद बजावेजी ॥ १ ॥
बरषत रस रुचि मनहिं अचै अरु रह्यो परम सुखछाईजी ॥
आति अगाध सुख संग श्याम पद सोइ मोन सुखदाईजी ॥
मंत्र दियो रत ऐन हरीको भजन ध्यान मन माईजी ॥
कौन सुने फीकोमतो अब गुरू करत हम नाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

लखि सब गोपिनको प्रेम ऊधो मन मगन भये अतिभारी॥
गये अपनो नेम विसारि जबहिं तब ब्रजकी रीति निहारी ॥
यों कहन लगे सुखपाय धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनारी ॥
जिनके सरबस नँदलाल रहत नाहिं एकहु निमिष विसारी ॥
मैं कहां लगि करों बडाई, मुखते कछु बरनि न जाई;
तुमहीं मुहिं भक्ति सिखाई ॥ तुम गुरू मैं दास तुम्हारो
करहु कृपा अब सारी॥ लखि सब गोपिनको प्रेम० ॥ १॥
मैं दरश तुम्हारो कियो ताहिते भक्ति हरीकी पाई ॥
जान्यों नाहिं तुम्हरो भाव तबहिं मैं कीनों और उपाई ॥
आये सिखरावन योग ऊधोजी सीखे भक्ती आई ॥
भये मगन प्रेमरसमाहिं लगे गुण गावन हरि सुखदाई ॥
कबहूं कुंजनमें जाई, लौटत पुनि पुनि रजमाई;
भेंटत विटपन सों धाई ॥ लेरज शीश चढाय
ऊधो मन भये आनंद अपारी॥लखि सब गोपिनको प्रेम०२
कबहूं गोपिनके चरण नवावत शीश बारही बारी ॥
पुनि जोरत कर शिरनाय कहत धनि ब्रजधनि गोपकुमारी॥
धनि धन्य ग्वाल धनि गाय धन्य धनि बन बन हरि इनचारी
धनि धनि वृन्दावन धाम धन्य धनि धन्य भूमि शुभकारी॥

ऐसे मन प्रेम लगायो, अति आनँद उर न समायो;
तनुकी सब सुरति भुलायो ॥ ऊधो मन आनंद भई
सुधि कही सो कृष्ण मुरारी॥लखि सब गोपिनको प्रेम०॥३॥
तब भई सुरति तनु माहिं धरी मन हरि मिलनेकी आशा ॥
आयो हौं कहि दिनदोय ब्रजहिमें बीत गये षटमासा ॥
यों उपज्यो उर अति शोच वेग मुहिं बोल्यो हरि सुखरासा ॥
अति मनहिं भयो संकोच भये उर हरिके वचन प्रकाशा ॥
मनहीं मन माहिं उपावै, अब जाउँ वेगि यह चावै;
मन और न कछू सुहावै॥ ऐसे मनहिं विचार ऊधोजी
करि चलबेकी त्यारी ॥ लखि सब गोपिनको प्रेम० ॥ ४ ॥
दोहा—तब उपंगसुत तुरतही, लीनो रथ पलनाय ॥
बरषानेते मधुपुरी, चलबेको अतुराय ॥
चौबोला—चलबेको अतुराय ऊधो अब जात सबन सुन पाईजी॥
तब ब्रजनारि सकल अकुलाई ऊधोके ढिग आईजी ॥
ऊधोजी विनती करि सबसों हाथ जोर शिरनाईजी ॥
अब मुहिं देवि अनुग्रहकीजै द्योआयसु मैं जाईजी ॥ १ ॥
जिमि सेवक हरिको मैं तिमि अब तुम्हरो दास कहाईजी ॥
कृष्ण कहेते करी ढिठाई कह्यो जो मैं कछु आईजी ॥
सो अपराध क्षमा अब कीजे गोपी जन समुदाईजी ॥
होय.प्रसन्न आशीश यह दीजै दया करैं सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ऐसी विमल न बुद्धि मम, तुम गुण करों बखान ॥
करियो कबहूँ सुरति मम, निज जन अपनो जान॥
चौ०-निजजन अपनो जान कबहुँ तुम करियो सुरत हमारीजी ॥
सुनि ऊधोकी निर्मल वाणी भई विवस ब्रजनारीजी ॥
क्यों नहिं ऊधोजी कहते तुम ऐसे वचन विचारीजी ॥

अंत बडे सब भांति तुमहिं हो हम निदान जड़ ग्वारीजी ॥१॥
लघु दीरघताके भयेते होय नशील समानीजी ॥
भृगु कीनो अपमान श्रीपतिः लीन्हो भूषण जानीजी ॥
कहां गरलसे वचन हमारे सहे तुम हो अति ज्ञानीजी ॥
तुम हित कह्यो हमे सुखमानी तरन वेद विधि बानीजी ॥ २ ॥

दोहा—हम गँवारि समुझी नहीं, लीनी उलटी जान ॥
कटुक वचन तुम सों कहे, जोइ सोई मन मान ॥

चौबोला-जोइ सोई मनमान कही हम कहि अब अति पछितावैंजी
लोक वेद छोड़ो हम जैसे अब ताको फल पावैंजी ॥
श्याम दरश विन कछु न सुहावै बहु विधि मन समुझावैंजी ॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको महिमा कहँ लगि गावैंजी ॥ १ ॥
करिकै कृपा कीजिये सोई मिलहिं श्याम बनवारीजी ॥
समय पाय हरि आगे कहियो देखि चले अब सारीजी ॥
घोषबसतकी चूक हमारी मन न धरें गिरिधारीजी ॥
करहिं कृपा मन गुण न विचारी जानहिं दीन दुखारीजी ॥ २ ॥

दोहा—धरी सुरत सोइ वचनकी, आवन कह्यो ब्रजराज ॥
कहा कहैं कहियो यही, बाँह गहेकी लाज ॥

चौबोला—बांह गहेकी लाज प्रभू दीनन पति हरिको नामाजी ॥
हरि हैं लोचन प्यास हमारी दरश दिखाके श्यामाजी ॥
भई विरह सागर मगन सब ऐसे कहि ब्रजबामाजी ॥
ऊधो करी प्रणाम सबन तब आये नँदके धामाजी ॥ १ ॥
मांगी विदा जोरकर दोऊ धनि तुम वचन सुनायोजी ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण अविनाशी सो तुम गोद खिलायोजी ॥
धनि गोकुल धनि ब्रज जन जिनके प्रेम विवस हरि आयोजी॥
कृपा करी मुहिं कृष्ण पठायो दरश तुम्हारो पायोजी ॥ २ ॥

दोहा—अब मुहिं आयसु दीजिये, अति प्रसन्न सुख पाय ॥
और सँदेशो जो कहो, कहूँ कृष्ण सों जाय ॥
चौबोला—कहूं कृष्ण सों जाय ऊधोकी सुनी प्रेमकी बानीजी ॥
नन्द बबा अरु यशुमतिं माता जात ऊधो यह जानीजी ॥
उमँग्यो प्रेम हृदय अति भारी ठाढी यशुमति रानीजी ॥
उरवर श्याम विरहकी पीरा बहत दृगनते पानीजी ॥ १ ॥
यशुदाकी आशीश सुनाई कहियो हरिसों जाईजी ॥
कोटि युगनजीवो दोउ भाई कमल नैन सुखदाईजी ॥
तुम विन दुखित यशोदामाई कहियो यह समुझाईजी ॥
इतनी दया मातकी लीजे एकबार मिलें आईजी ॥ २ ॥

अथ उद्धवजीकी विदालीला।

दोहा—नन्द दोहनी भरि दई, कह्यो नैन भरिनीर ॥
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलवीर ॥
चौबोला—भावतहो बलवीर मुरलिया दई यशोमति माईजी ॥
प्यारी ही अति श्याम सुन्दरकी ऊधो दीजो जाईजी ॥
ऊधोलै माथे धर लीनी बहु विधि विनय सुनाईजी ॥
चल्यो योगकी नाव बुड़ाई भयो गोप ब्रज आईजी ॥ १ ॥
जाय कृष्णको शीश नवायो प्रभु हित कंठ लगायेजी ॥
कहिये सखा कुशल सों आये ब्रजमें बहुदिन लायेजी ॥
नन्दबबा अरु यशुमति माई कहो कौन विधि पायेजी ॥
बसत प्राण मोहींमें जिनके कैसे दिवस बितायेजी ॥ २ ॥
दोहा—कहा दशा ब्रज तियनकी, राखत मोसों प्रीति ॥
पुलकि गात ऊधो भये, समुझत ब्रजकी रीति ॥
चौबोला—समुझत ब्रजकी रीति भूलगयो यदुपति नाम बड़ाईजी

कह्यो सुनो गोपाल गुसांई ब्रजगति कहत न आईजी ॥
ब्रजबासिनको दरश दिखायो मुहिंको तहां पठाईजी ॥
तादिन गयो तुम्हें शिरनाई पहुँचे गोकुल जाईजी ॥ १ ॥
दूरहिते रथ ध्वजा देखि अरु पीतांबर शुभकारीजी ॥
जान तुम्हें आवत अति हर्षित धाये नर अरु नारीजी ॥
रहे ठगेसे सब ब्रजबासी रथपर मोहिं निहारीजी ॥
परे धरणि मुर्छित अति व्याकुल चली दृगन जल धारीजी ॥२॥

दोहा–विरह घाव सुरजे सोई, गये बहुरि मनु फूट ॥
भये सकल व्याकुल अति, गई आश सब टूट ॥

चौबोला–गई आश सब टूट तुम्हारो पठयो जब मुहिं जानीजी॥
ले नँद सदन माहिं अतिहितसों करि आदर सनमानीजी ॥
बूझी कुशल सभ्रात तुम्हारी यशुमति अति अकुलानीजी ॥
तृषित चातकी लौं रट लाई कृष्ण कृष्ण जक बानीजी ॥ १ ॥
प्रभु प्रताप हम जान्यो नाईं बार बार पछिताईजी ॥
अब कसकत करनी वह मोहीं बाँधे ऊखल लाईजी ॥
परम अभागी नाहिंन गोहन ब्रज अब शून्य लखाईजी ॥
ठाढी रही ठगोरी लाई तजि गये कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तजे प्राण दशरथ तबै, अपने सुतहित लागि ॥
अति कठोर मेरो हियो, देखत रही अभागि ॥

चौबोला–देखत रही अभागी अब जनु ऐसेही मरजाईजी ॥
बहुरि न श्यामहिं गोद खिलैहों ऐसे कहि अकुलाईजी ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता अतिहि दुखित बिलखाईजी ॥
नन्दहु सुमिरत तुम गुण नामा सब निश कहत बिताईजी॥१॥
मैं उनको बोधे बहुतेरे तुम विन कछु न सुहाईजी ॥
तिनकी दशा निहारि मोहिं तब युग सम रात लखाईजी ॥

गयो प्रात वृषभानु पुरामें नन्दहि कहि समुझाईजी ॥
धाम काज तजि बाम सकल तहँ सुनतहि आई धाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

मोहिं तुम्हारो निज जन जान्यो सनमान्यो सब ब्रजनारी ॥
लखि पट भूषण चिन्ह तुम्हारे भई विवस सब सुकुमारी ॥
टेक-सिथिल अंग भरि आये नैना पूँछी सब मिल कुशलाई॥
कह्यो संदेशो तुम्हारो सुनत साँच मनमें आई ॥
बीती घरिक धीर उर जान्यो मेरी बात सुनीनाई ॥
कछुक परेखो तुमहिं सों दूषण कुबिजाकोगाई ॥
तिनकी बात नजात बखानी प्रेम पंथमें सब भारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भई विवस सुकुमारी॥१॥
वह रस रीत देख उनकेरी मेरी बात न मनभाई ॥
ग्रंथ युक्ति सब कथा सुनाई बहु विधि कहि मैं समुझाई ॥
कहिबे में न कछू सक राखी भई पवन ज्यों भुसमाई ॥
ज्ञानपंथ जो श्रीमुख बानी सो न कोऊ मनमेंल्याई ॥
कै इक कही बनाय अनेका उन दृढ व्रत एकै धारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारेभईविवश सब सुकुमारी२
मेटि वेद विधि नीति गही उन गहन एकही मनमाई ॥
रहीं विश्व भरि जीति तुम्हारे गोप भेष भजि सुखदाई॥
जो विधि जाय सिखावाहे तिनको तो वे कबहुँ सुनतनाई
वहां जाउ तो जानहुँ मैं सब तुम्हरी चतुराई ॥
क्षमा करो आयसु जो पाऊँ अपनी बात कहूँ सारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भई विवश सबसुकुमारी३
योग कथा कहि अबलन पाहीं होय इतो दुख क्योंनाई॥

मैं निर्गुण गुण एक बखानी सोऊ पूरी नहिं आई ॥
वे सब उमँगे बारिध[1] ज्योंई जामें थाह नकोउ पाई ॥
कह्यो एकमैं पहरेक माई वे कोटिक कहि क्षणमाईं ॥
कौन कौनको उत्तर आवै सुनत नहीं बातें नारी ॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे भई विवश सब सुकुमारी
दोहा-प्रेम प्रीति उनकी लखी, धरी रही मो बात ॥
रह्यो चकित मन जिमि हिरन, भूल चोकरी जात ॥
चौबोला-भूल चोकरी जात हरी मैं योग काहि सिखराईजी ॥
वेषट[2]वेत्ता सकल सहजमैं बारह खडीहि पढाईजी ॥
अबलन वचन सुनतही मेरे अग्नि जिमी घृत पाईजी ॥
बहुत भांति कर मैं सब याची कची कोऊ नाईंजी ॥ १ ॥
यथा पपीहा घन मन लाई सगुण प्रेम दृढ जानाजी ॥
कहा निरोगहि वैद हरी तुम यह जानो अनुमानाजी ॥
श्याम राम अंबुज[3] नयन न सों तिन्हें निरंतर ध्यानाजी ॥
अविलोकन उनको भजन जिन लागत फीको ज्ञानाजी ॥ २ ॥

लावनी।

मैं देख्यो रहि पट मास तहां निज जाई ॥
एकहिहै घरघररीति सकल ब्रजमाई ॥
टेक-ज्यों बाढत धन .कुरुक्षेत्र दियो अधिकाई ॥
त्यों बढत प्रेम ब्रजवासिनको तुम माई ॥
परगट तुम्हरे गुणगात देह सुधि नाई ॥
कोउ कहत गये गोचारन कुँवर कन्हाई ॥
मारचो अघ बनमें जाय तहां सुखदाई ॥

१ समुद्र। २ छहौशास्त्रज्ञाता। ३ कमला।

एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमांई ॥ १ ॥
कोउ कहत इन्द्र चढि आयो गिरिहि उठावै ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमाई ॥
कोउ कहत यमुनते नाग नाथले आवै ॥
कोउ कह खेलत नँदलाल घरनमें जावे ॥
कोउ कहत जाय ग्वालन में धेनु दुहावे ॥
कोउ कहत कुटिल घनश्याम वसे कहुँ जाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रजमाई ॥ २ ॥
ब्रज लखी तियनकी रीत लगी मुहि प्यारी ॥
ऐहों मै कहि गयो बेगसो सुरत विसारी ॥
तब भई सुरत मधुपुरिकी मनहिं विचारी ॥
षट मास बीत गये मुहिया ब्रजहि मझारी ॥
तब उपज्यो उर अति सोच चल्यो उठधाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रज माई ॥ ३ ॥
अब कहां मोहिं सुख वह रस परम सुहायो ॥
जो कह्यो जात नाहिं बडभागी जन पाया ॥
सो बस्यो न कछु तिन माहिं वृथा जग आयो ॥
श्रुति शेष ब्रह्म नहिं पात सो गोपिन गायो ॥
वह प्रीति रीति ब्रजजनकी मोमन भाई ॥
एकहि है घर घर रीति सकल ब्रज माई ॥ ४ ॥
दोहा—निरखत मूरति यदपि इहां, तदपि वहाँ मन धाय ॥
गुंजमाल अरु मुकुट शिर, मुरली मधुर बजाय ॥
चौबोला-मुरली मधुर बजाय सुभग तनु गोरज अति छबि छाईजी
तिरछी चितवन चारु हँसन मन सो छबि बरनि न जाईजी ॥
गोपी ग्वालन सों हरि बोलत डोलत ब्रजके माईजी ॥

तब वह सुख समुझत मन भावे इत लखि कहत न आईजी ॥ १
तुमरी अकथ कथा तुम जानो अति शुभ कहिय न जावेजी ॥
मैं कहा जानो मूढ अयानो ब्रह्मादिक नहिं पावेजी ॥
तुम प्रभु हो करुणाके आलय यह मुहि अचरज आवेजी ॥
होत कठोर कठिन मन काहे ब्रजबासिन तरसावेजी ॥
दोहा—निगम कहत वश भक्तके, पूरण सब सुखसाज ॥
करि सुदृष्टि ब्रज पेखिये, गहो विरदकी लाज ॥
चौबोला—गहो विरदकी लाज सकल ब्रज दरश तिहारो चावेजी॥
अतिहि दुखित तनु क्षीण भये सब तुम विन कछु न सुहावैजी॥
तुम तन मन धन लीन भये अब चातक लौं रट लावैजी ॥
कहों कहा गति प्रभु राधाकी विरह व्यथा दुख पावैजी ॥ १ ॥
भूषण विन अति क्षीण शरीरा रह्यो नैन जल छाईजी ॥
रहत बावरी ज्यों घरमाई सुधि बुधि तनुकी नाईजी ॥
कबहुँक नाम आपनो गावै कबहुँक कहत कन्हाईजी ॥
विविदिश अग्नि काठ कृमि जैसे तैसे विरह सताईजी ॥ २ ॥
दोहा—लहत न क्योंहूं धीर मन, रहत मौन शिरनाय ॥
समुझावत समुझंत नहीं, कोटि कहो कोउ आय ॥
चौबोला-कोटि कहो कोउ आय गृह जन देखि देखि दुखपावैजी
सूखी नलनी जिम विन पानी लखि लखि यत्न न आवैजी ॥
आशा अवधि प्राण तन जैसे तृणपर ओस सुहावैजी ॥
अचरज मोहिं बड़ा यह आवै प्रभु तुमको कहा भावैजी ॥ १ ॥
भक्तन हित तनु धारचो स्वामी करुणामय सुखदाईजी ॥
ब्रजजन मरत जियावहु तिनको दरशन दीजे जाईजी ॥
यह मुरली दे अतिहि विलखके कह्यो यशोमति माईजी ॥
एक वार हित नन्दमहरके दरश दिखावहु आईजी ॥ २ ॥

दोहा—आप चराईं हेतु करि, जिन गैयनको श्याम ॥
विडरी कुंजनमें फिरत, बहुरि न आईं धाम ॥
चौबोला—बहुर नआईं धाम ऊधोके बैन सुनत सुखदाईजी ॥
उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना ब्रजजनकी सुधि आईजी ॥
भये विवश जन प्रण प्रतिपाली लै मुरली उर लाईजी ॥
धरि ब्रज ध्यान रहे अरगाई सहज कृपालु सुहाईजी ॥ १ ॥
पुनि हा ब्रज कहि छांडि उसासा पोंछ हगन पट पीराजी ॥
भले सखा शिख दे ब्रज आये ऐसे कहि बलवीराजी ॥
ब्रजभक्तन मम रूप अधारा मोबिन धरत न धीराजी ॥
मेरे मुक्ति बडी निध सो ये ब्रजजन जानत नीराजी ॥ २ ॥
दोहा—ताते जो जनके मनहिं, सोइ करत बन आत ॥
ममप्रण भक्ताधीन सोइ, ब्रजजन मोहिं सुहात ॥
चौबोला—ब्रजजन मोहिं सुहात ताहिते ब्रजमें रहत सदाईजी ॥
इन सम और हितू नहिं कोई तजत एक क्षण नाईंजी ॥
सब समरथ प्रभु सब गुणसागर विहारन कुँवर कन्हाईजी ॥
मन करि हरि ब्रजमें रहे मिल ब्रजवासिनके माईंजी ॥ १ ॥
तनक सुरन हित काज द्वारिका नाथ धरायो नामाजी ॥
नटवरवपु मुरली धरे हरि सदा बसत ब्रज श्यामाजी ॥
कोटि काम लावण्यं निध प्रभु ब्रजजन पूरण कामाजी ॥
बसंत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई विहारन जन सुखधामाजी ॥ २ ॥
दोहा—कृष्ण प्रेम पूरण भरी, सब मिल गोपकुमारि ॥
कबहूं न्यारी श्यामते, होत नहीं ब्रजनारि ॥
होत नहीं ब्रजनारि श्यामके सब गोपी मन भावैजी ॥
नित्य नवल नित बनाहिं विहारा नित नव विविध उपावैजी ॥
नित्य धाम वृन्दावन पावन नित रस रास सुहावैजी ॥

शिव सनकादि शेष जिहिं ध्यावें सुर मुनि ध्यान लगावैजी॥ १॥
ब्रज. गोपिनकी महत बड़ाई एक समय विधि गाईजी ॥
भृगु नारद आदिकजे भक्ता पूछी विनय सुनाईजी ॥
वेद ऋचा सब ब्रज तिय जानो कह्यो विरंचि समुझाईजी ॥
इन सम होत लक्ष्मी नाईं सत्य कहूँ तुम पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नाहिं न्यारी क्षण कृष्णते, इन सम और न कोय॥
इनके भाव भजे कृष्ण कोउ, प्रीति रीत दृढ होय ॥
चौ०—प्रीति रीति दृढ होय कृष्णको भजै जो कोउ मनलाईजी॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई वेद ऋचा गति पाईजी ॥
धारैं शीश चरण रज इनकी वृन्दाबनके माईंजी ॥
सोऊ गति इनकी लहैं जन यामें संशय नाईंजी ॥ १ ॥
महिमा श्रीब्रज गोपिन केरी यों विधि कही बुझाईजी ॥
पावन बृहतपुराण माहिं सोइ वेद व्यासजी गाईजी ॥
ताते भृगु आदिक नारद मुनि ब्रह्मादिक सुर राईजी ॥
वृन्दावन रज बांछित रहहीं हरि भक्तन मन भाईजी ॥ २ ॥

लावनी।

ब्रजरज अति दुर्ल्लभ श्रुति भाषैं बडभागी जन जो पावे॥
चितधर सोई विमल रज ब्रजचरित्र विहारन गावे ॥
टेक—कृष्ण चरित्र ब्रजवन निकुंजको सार सकल सुख सुकृतनको
सार ध्यान अरु विज्ञान ज्ञानको वेद शास्त्र पुराणनको॥
सार बहुरि अतिहास भजनको योग जाप बहु यज्ञनको
सार अमित सबसंत मतनको हरिपद यत्नप्रेम मनको ॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको गावहिं सो भक्तीपावें ॥
चितधर सोई विमल रज ब्रजचरित्र विहारन गावें ॥ १॥

सार सकल रस रसिकाईको कहे सुने आनँद आवे ॥
सार सकलको परम सुहावे ब्रजचरित्र भक्तन भावे ॥
सहित सुभाव प्रीति जो ध्यावे ते गति गोपिनकी पावे॥
यह ब्रजलीला प्रीतिकर नर नारी कोऊ गावे ॥
सीखें सिखावें पढें रुचिकर प्रेमानन्द मन उपजावे ॥
चित धरसोई विमल रज ब्रज चरित्र विहारनगावे॥२॥
धरिभाव भरता श्री कृष्ण सों उरहि कमलपदचितलाई
श्याम राधिका कृपा करै तब ब्रज गोपिनकी गतिपाई
पूरण सब मनकाम सकल सुख धाम सुहरिपद सुखदाई
दलन दारिद दोष दुख भव यमहिं कालको भयनाई॥
यह जान गावहिं सुजन हरि यश सोजन परमानंदपावे
चित धर सोई विमल रज ब्रज चरित्र विहारनगावे॥३॥
ब्रजचरित्र ब्रजराज कियो सो पार न कोऊ कहिपायो॥
भक्त भावकरि गावत हरिजन भजन भावमन मेंलायो ॥
श्री ब्रजवासी दास कह्यो सो ब्रजविलास जगमें छायो ॥
दास विहारी देखि अति मगन भयो मनमें भायो ॥
सो लीला लखि बहुरि विहारन चौबोला कहिकें ध्यावे ॥
चित धर सोई विमलरज ब्रजचरित्र विहारन गावे ॥४॥

दोहा–ब्रजचरित्र ब्रजराजको, को कहि पावै पार ॥
भजन भाव उर आनि सब, गावतमति अनुसार ॥
जिहि तिहि विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति वेद ॥
उलटो सीधो कहो कोउ, सोनहिं होत निषेद ॥
विहारन को कछु है नहीं, कविताईको भान ॥
भजन भाव उरमें धरचो, कियो नामको गान ॥
शुभा शुभ जिन देखियो, हरिजन संत सुजान ॥

कहियो सुनियो प्रीति करि, नाम हरीको जान ॥
हरिको नाम विचार मन, गायोकर विस्तार ॥
निज युक्ती यामें नहीं, ब्रजविलास अनुसार ॥
ब्रजविलास अनुसारले, कह्यो यथा मति गाय ॥
जन्म जन्म गाऊँ यहै, यहै रह्यो मन चाय ॥
सोवत जागत चलत में, निश दिन प्रभु पद ध्यान ॥
सब हरिजन करिकै कृपा, देहु यहै बरदान ॥
नाहिं तप तीरथ दान बल, नहीं कर्म व्यवहार ॥
विहारन जनको सब विधी, राधा श्याम आधार ॥
धोखेहूँ कोऊ कहत, मुखते श्रीगोपाल ॥
विहारन ताके पग तरे, मेरे तनुकी खाल ॥
ब्रज चरित्रके माहिं सो, कहूं सकल विस्तारु ॥
एक सहस्र पंचशत, दोहा मनोहर चारु ॥
युगल सहस्र अरु ग्रह सत, द्वै मास दिन जान ॥
इतने याके माहिं सब, चौबोला परमान ॥
वेद शास्त्र पुराण सब, ब्रह्म मिलाकर देख ॥
इतनी जानो लावनी, और बारता एक ॥
सबको नुष्टपछंद करि, दश सहस्र अनुमान ॥
खंडित होन न पावही, लिखियो देखि सुजान ॥

इति श्रीब्रजचरित्र विहारीदासकृत संपूर्णम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना (मुंबई.)

जाहिरात.

शुद्धाशुद्धपत्र।

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९५	२३	सखित	सखिन
१९७	१६	कोकलाज	लोकलाज
२०७	११	सबन	बसन
२१०	१४	बगाईजी	बनाईजी
२१५	२१	वेद	देह
२४५	११	गिरिहि	गिरहि
२४६	४	घर	धर
२४६	६	राते	रीते
२४६	पृष्ठकी बारहवीं लाइन (अतिभय तनकीदशा भुलाने चले इंद्रके पाईजी)		
२५५	२२	पतियायेजी	पतिपायेजी
२५६	१६	जलराईजी	जलरायाजी
२५८	५	राजाजी	रासाजी
२७७	७	व्रंजमाई	ब्रजमाई
२९०	२३	रूप	रूपहि
२९२	१४	खावैजी	स्यावैजी
२९३	२४	औ	और
२९८	१३	शशि	शीश.
३०१	२३	ताही	तोही
३०६	१२	साईजी	साईजी
३१४	१९	कत	कहत
३१४	१९	हम	म
३१५	१७	मैंने	मैं नै
३१५	१८	चतुरे	चतुरै
३१५	१९	पेहैंजी	पैहैंजी
३१९	८	सह	सहित
३२५	१८	मन	मनु
३२५	१८	पाईजी	आईजी
३३०	६	मरत	भरत
३३०	१७	लाख	लखि

शुद्धाशुद्धपत्र।

पृष्ठांक.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३४४	११	ब्रजत	ब्रजते
३४८	१	धारउ	धारेउर
३४९	१०	मोईजी	माईजी
३४९	१४	माइजी	मोइजी
३५७	१८	नखन	त्रवन
३६१	५	लहहू	कहहू
३७१	४	बिन	बिच
३७१	९	कलस	सकल
३८३	२४	मतिमाकोजी	मतिमानैकोजी
३९४	२५	ढाठ	ढीठ
३९७	२३	दाहित	चंदाहित
४०३	८	गंधर्वजनन	गंधर्वजन
४०८	६	सीद्धरु	सीद्ध
४२६	६	नैन	बैन
४३३	१३	सदा	साद
४४०	३	पनायो	मनायो
४४१	५	कह	कहा
४४३	२५	कहहु	कहत
४५८	२३	प्यारे	प्यारी
४७०	१	पन	मन
४८६	२५	अब सब वसन	अब वसन
४९६	५	वसन	सबन
४९६	५	सुखकारीजी	सुखभारीजी
४९७	२१	सहायक	सगायक
५५६	३	कहायोजी	कहायाजी
५५८	७	रवाये	करवाये
५७३	१७	कमर	कामर
५७३	२२	अवाध	अवधि
५९४	१६	अज्ञानीजी	अज्ञानाजी
५९४	१७	पुरानीजी	पुरानाजी
६१३	९	फर	कर
६३१	१	दुबारा होनेके कारण न पढ़ना चाहिये	

इति ॥